BENGAL LI
7. DEC. 190
WRITER BUILDIN
॥ रूठी रानी ॥

॥ श्रीः ॥

रूठी रानी ।

एक ऐतिहासिक उपन्यास ।

जोधपुरनिवासी

मुन्शी देवीप्रसादजी

रचित ।

कलकत्ता ।

९७ मुक्तारामबाबूस्ट्रीट, "भारतमित्र" प्रेससे

पण्डित कृष्णानन्द शर्म्मा द्वारा

मुद्रित और प्रकाशित ।

सन् १९०६ ई० ।
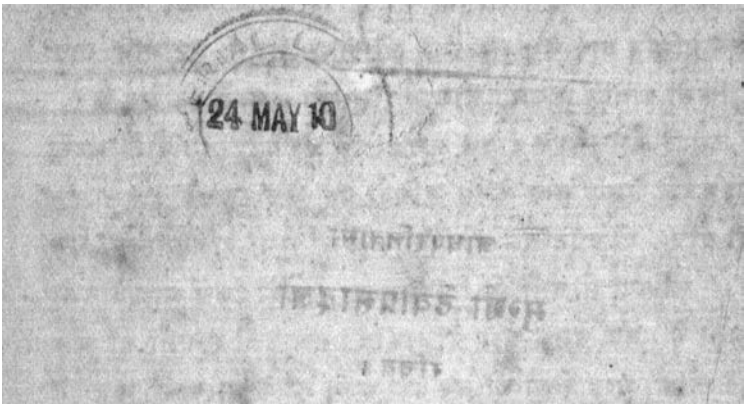
रूठी रानी।

उमादे भटानी।

सगाई।

हिन्दुस्थानमें बहुत रानियां हुई हैं जिन्होंने किसी न किसी बातमें प्रसिद्धि पाई है। रूठनेमें जो नाम उमादे भटानीने पाया वह किसी रानीने न पाया होगा। उसकी कहानी विचित्र है।

उमादे जैसलमेरके रावल लूनकरण* की बेटी थी। पौने चारसौ साल पहले उसके जन्म लेनेसे पृथिवी पर नये ढङ्गकी चहलपहल मची थी। थोड़े दिनोंमें उसके सौन्दर्य्यकी धूम राजपूतानेमें मच गई। सखियां सोचती थीं कि देखें यह सुन्दरी किस भाग्यवानको मिलती है। वह उसके आगे राजाओंकी गुणावली सुनाती थीं और उसके जीकी थाह लेती थीं पर वह अपने रूपके घमण्डमें कुछ न सुनती थी। उसे केवल रूपहीका गुमान न था, दूसरे गुण भी रूपके सदृशही रखती थी। मनके साहस और हृदयकी उदारतामें भी कम न थी। स्वभाव संसारसे निराला था। छूईमूईकी तरह जरा किसीने उंगली दिखाई और वह कुम्हलाई। माता कहती थी, बेटी पराये घर जाना है यह स्वभाव कैसे निभेगा। पिता कहता था कि बेटी छोटी छोटी बातों पर रञ्ज न मानना चाहिये पर वह अपनी धुनमें किसीको न सुनती थी सबका जवाब उसके पास चुप था।

धीरे धीरे कन्या विवाहके योग्य हुई। रानीने रावलसे कहा कि बेसुध क्या बैठे हो लड़की स्यानी हुई उसके लिये वर ढूंढो, उसके हाथ पीले करो।

---

* रावल लूनकरणजी संवत् १५८६ में गद्दी पर बैठे थे।

रावलने उत्तरमें कहा—जल्दी क्या है राजा लोगोंमें चर्चा हो रही है, सन्ध्या सवेरेमें कहीं न कहींसे विवाहका पत्र आता है। यदि अपनी तरफसे किसीके पास पत्र भेजा जायगा तो उसका मिजाज आसमान पर चढ़ेगा।

मारवाड़के राव मालदेव* राठौड़ने भी उमादेके रूपकी प्रशंसा सुनी। उन्होंने रावलसे कहला भेजा कि अपनी कन्या हमें दो। पुराने समयसे हमारे आपके सम्बन्ध चला आता है कुछ नई बात नहीं है।

रावलने यह समाचार पाकर जीमें कहा कि वाह, मेरा सारा देश तो नष्ट भ्रष्ट कर दिया अब बेटी भी मांगता है। फिर सोचा कि शेर स्वयं पिंजरेमें फंसता है ऐसा अवसर फिर न मिलेगा चूकना न चाहिये। घर बैठे शत्रुका शिकार होता है। यह सोच कर रावलने सोने चान्दीके नारियल† भेजे। राव मालदेवजी बरात सजाकर जैसलमेर आये। जेता और कूंपा उसके सूरमा सरदार सेना सहित दायें बायें चलते थे।

रावलने अपनी रानीसे जैसलमेरके किलेके झरोखोंसे दिखाकर कहा कि यह वही है जिसके भयसे न मुझे रातको नीन्द आती है और न तुझे कल पड़ती है। यह अब उसी द्वार पर तोरण¶

---

* राव मालदेव संवत् १५८८ में गद्दी पर बैठे।

† सगाईमें राजा लोग सोने चान्दीके मंढ़े हुए नारियल भेजते हैं।

¶ तोरण बान्धना—वर सुसरालके द्वार पर जाकर तोरणको छड़ी या तलवारसे छूता है। इसे तोरण छूना तोरण चटकाना या मारना कहते हैं। तोरण माने महराब। घरके द्वार प्रायः महराबदारही होते हैं इससे तोरण नाम द्वारका समझना चाहिये। पर विवाहके समय काठकी चिड़ियोंका एक गुलदस्ता बनाकर टांग देते हैं उसीको वर छूता है।

बांधेगा जो उसीके भयसे बहुधा बन्द रहता है। पर देख, मैं भी क्या करता हूं। यदि चौरी‡ मेंसे बचकर चला गया तो मुझे रावल मत कहना। बेटी तो विधवा होगी पर तेरी तरफका कांटा जन्मभरके लिये दिलसे निकल जायगा, बल्कि कुल राजपूतानेभरको कल पड़ जायगी।

रानी यह सुनकर रोने लगी। रावलने डांटकर कहा, चुप! रोयेगी तो बात फूट जायगी। फिर कुशल नहीं, यह हिंसक सबको खाजायगा। देख व्याहने आया है पर सेना कितनी साथ लाया है। यह तो एक दिनमें घड़सीसर§ का सब पानी पी जायगी। हम तुम और सब नगरवासी प्याससे मर जायंगे। रानीको बेटीके विधवा होनेकी आशङ्कासे दुःख तो बहुत हुआ पर पतिकी बात मानकर वज्रकी छाती करके चुप होरही तथापि उसकी घबराहट छिपाई छिपती न थी।

बेटी माको घबराई देखकर समझ गई कि दालमें कुछ काला है, माको अधिक रोते देखकर उसने जान लिया कि आज रातको सोहाग और रण्डापा साथ साथ मिलनेवाला है। जीमें बहुत तड़पी तलमलाई पर कलेजा मसूस कर रह गई। जीमें कहा कि बेटी बिन सींगोंकी गाय है जब मा बापही उस पर अत्याचार करें तो किससे कहा जाय और कौन सुने।

सखी सहेलियां फूली फूली फिरती थीं, राजभवनमें आनन्द फैला हुआ था। बाहर शादियाने बज रहे थे, उधर बरातमें भी ऐसीही तय्यारियां होरही थीं पर उमादेके जीका दुखड़ा कोई नहीं जानता था। सखियां उसे दुलहन बना रही हैं कोई उसके हाथ पांवमें मेहदी लगाती है कोई मोतियोंसे मांग भरती है कोई चोटीमें फूल गूंथती है कोई दर्पण दिखाकर कहती है वाह अच्छी बनी हो। पर बनोकी जान पर आबनी है, ज्यों ज्यों

‡ विवाह होनेकी जगह। § जैसलमेरके पास एक तालाब है।

दिन ढलता जाता है उसके चेहरेका रङ्ग उड़ता जाता है, सखियां ओरही ध्यानमें हैं, यहां बातही और है।

उमादे अचानक सखियोंके झुरमटसे उठ गई और भारेली नाम की एक सुघड़ सहेलीको इशारेसे अलग बुलाकर कुछ बातें करने लगी।

भारेली रूप बदलकर चुपकेसे राघोजी जोशीके पास गई और पूछने लगी कि क्या आपने किसी कुमारीकन्याके विवाहका मुहूर्त्त निकाला है। उन्होंने कहा और किसीका तो नहीं रावलजीकी बाईके विवाहका मुहूर्त्त अवश्य निकाला है।

भारेली—क्या आप फेरोंके समय भी जायंगे ?

जोशी—नहीं जाऊंगा तो मुहूर्त्तकी खबर कैसे पड़ेगी ?

भारेली—क्या नगरमें और भी कहीं आप मुहूर्त्त बताते और विवाह कराते हैं ?

जोशी—सारे नगरमें मैंही इन कामोंके लिये बुलाया जाता हूं।

भारेली—जोशीजी, यह मैं पूछती हूं कि आप जिन कन्याओं का विवाह कराते हैं वह कितनी घड़ियों तक सुहागन रहती हैं ?

जोशी—(चमककर) हैं, यह तूने क्या कहा! क्या मुझसे दिल्लगी करती है ?

भारेली—नहीं जोशीजी, दिल्लगी नहीं करती।

जोशी—तो फिर क्या कहती है ?

भारेली—कुछ नहीं, एक बात पूछती हूं। मैंने आज एक गड़बड़की बात सुनी है।

जोशी—वह क्या ?

भारेली—तुम अपने मुहूर्त्तकी एक बार फिर जांच करलो तो कहूं।

जोशी पट्टी लेकर बैठा और अपने निकाले मुहूर्त्तकी खूब जांच करके बोला—"मुहूर्त्तमें तो कुछ खोट नहीं है।"

भारेली—कर्ममें खोट है।

जोशी—नहीं मैंने जन्मपत्र देखकर मुहूर्त्त निकाला है, खोट कैसा ?

भारेली—अजी कर्मपत्र भी देखा है? तुम्हारे मुहूर्त्तमें तो बाईजीका कर्म फूटना लिखा है।

जोशी—तो क्या रावलजीने कुछ दगा बिचारी है ?

भारेली—हां। राव मालदेवजी वैसे तो मारे नहीं जाते, चौरी में उन्हें मारडालनेकी सलाह हुई है।

जोशी—(उदास होकर) हरे हरे, राजाओंको धिक्कार है।

भारेली—जोशीजी इस दुःखको तो जानेदो, यदि कुछ उपाय हो तो करो।

जोशी—जब पिताहीको पुत्री पर दया नहीं तो मैं दीनब्राह्मण क्या कर सकता हूं।

भारेली—उपाय सब बातोंका होसकता है।

जोशी—तूही बता मैं क्या करूं।

भारेली—भले जोशी हुए, राजदरबारके जानेवाले होकर मुझ अबलासे पूछते हो कि क्या करूं!

जोशी—नहीं बाई, इसमें कुछ दोष नहीं। गुरु गुरु विद्या और सिर सिर बुद्धि।

भारेली—मेरी कही मानो तो इसी समय राव मालदेवजीके पास पहुंचकर उन्हें सावधान करदो।

जोशी—हां, यह ठीक है।

भारेली—तो क्या मैं जाकर बाईजीसे कहदूं ?

जोशी—क्या तू भारेली है ?

भारेली—जी हां।

जोशी—अच्छा मैं भी जाता हूं।

दिन ढल गया, बाजारोंमें छिड़काव होगया। लोग बरात देखनेके चावमें घरोंसे उमड़े चले आते हैं। जोशीने दरबारमें जाकर रावलसे कहा—सामेले (स्वागत) का मुहूर्त्त निकट है आप सवारीकी आज्ञा दें।

रावल—बहुत अच्छा, बरातवालोंको भी इसकी खबर करदो।

जोशी—हां, एक बात मुझे मारवाड़के ज्योतिषियोंसे पूछनी है।

रावल—वह क्या?

जोशी—जन्मपत्रसे तो नहीं, पर बोलते नामसे रावजीको आज चौथा चन्द्रमा और आठवां सूर्य्य है।

रावल—(जीमें प्रसन्न होकर) तो इससे क्या, मुहूर्त्त तो आपने जन्मपत्रहीसे निकाला है?

जोशी—महाराज, बोलते नामसे भी ग्रह देखे जाते हैं। चौथा चन्द्रमा और आठवां सूर्य्य घातक होता है। कोई ग्रह बारहवां नहीं है, नहीं तो——

रावल—(जीमें) क्या अच्छा होता जो कोई बारहवां ग्रह भी होता, जिससे पूरी विग्रही होजाती (प्रकाश्यमें बात काटकर) मारवाड़ बड़ा राज्य है, वहांके ज्योतिषियोंने देख लिया होगा। आप कुछ न कहें, उन्हें व्यर्थ आशङ्का होगी।

जोशी—नहीं, मैं आपका शुभचिन्तक हूं, मेरा धर्म्म है कि उनसे कहकर कुछ समाधान करादूं।

रावल—क्या समाधान?

जोशी—यही, दान दक्षिणादि।

रावल—तो दान अपनी तरफसे करा देना चाहिये उनसे कहने की क्या जरूरत है?

जोशी—नहीं, यह दान उन्होंकी तरफसे होना चाहिये, मैं सामग्री बता आऊंगा।

रावल—अपनी ओरसे होनेमें क्या कुछ हानि है?

जोशी—अपनी तरफसे तब दान कराया जाता जब बाईजीको कोई क्रूर ग्रह होता।

रावल—आज बाईको कैसे ग्रह हैं?

जोशी—बहुत बलवान हैं, पर स्त्रीका अच्छा बुरा अधिक उसके पतिके ग्रहोंसे सम्बन्ध रखता है। इसलिये बाईजीको भी वही ग्रह समझने चाहिये जो रावजीको हैं।

रावल—(फिर प्रसन्न होकर) तो अच्छा, जोशीजी बरातमें हो आइये। जल्दी आना यहां भी काम है!

जोशीजी—(चुटकी बजाकर) गया और आया।

रावलसे आज्ञा पाकर जोशी प्रसन्न मन वहांसे चला। राव मालदेवजीको खबर हुई कि जोशी राघोजी आते हैं। रावजीने कहा, उन्हें आदरसे लाओ वह बड़े ज्योतिषी हैं। वह क्या, उनके बेटे चंडूजी भी बड़े पण्डित हैं पञ्चांग बनाते हैं। चोबदार और ड्योढ़ीदार दौड़े जोशीजीको हाथोंहाथ लेआये। जोशी आशीर्वाद देकर बैठ गया। रावजीने कुशल पूछकर कहा—आपका पधारना कैसे हुआ?

जोशी—(इधर उधर देखकर) कुछ मुहूर्त बताना है!

यह सुन लोग हट गये और जोशी राव साहबसे दो बातें कह कर चल दिया। रावको बड़ी चिन्ता हुई, उन्होंने सरदारोंको बुलाकर सलाह की। जीता और कूंपा सरदारोंने कहा—आप कुछ चिन्ता न करें हम वहां इसका सब बन्दोबस्त कर लेंगे।

इतनेमें धौंसा बजा, कोलाहल होने लगा कि रावलजी आगये। तब रावजी भी सिर पर मौर माथे पर सेहरा बांधकर अपने डेरेसे निकले और घोड़ेकी पूजा करके सवार हुए। बरात चढ़ी कुछ दूर जाकर जाजम बिछ गई, गद्दी तकिये लग गये। रावल और

राव दोनो अपने अपने घोड़ेसे उतरे और गले मिले। फिर निशान का हाथी बढ़ा, दोनो साथ साथ किलेकी ओर चले। द्वार पर पहुंचकर रावलजी तो भीतर चले गये, रावजी तोरण बांधकर पीछे पहुंचे। राजभवनमें फिर दोनो मिलकर मसनद पर बैठ गये।

राजभवनमें विवाहकी तय्यारी होगई, नाजिर रावजीको बुलाने आया। रावजीके साथ रावलजी भी उठे। उठते समय रावजीके सरदार कहने लगे कि आप हमें छोड़कर कहां जाते हैं। यह कहकर उन्होंने रावजीका हाथ पकड़कर बीचमें बिठा दिया। रावलजी उस समय रावजीका कुछ नहीं कर सकते थे उन्होंने उल्टा अपनीही जानको जोखूंमें पाया। उनके सरदार भी अपनी सब सटपट भूल गये। रावजी बेखटके धीरे धीरे रनवासमें चले गये।

जनानी ड्योढ़ीसे उमादेकी मा सोढ़ी रानीने आरती करके राव-जीके माथे पर दही लगाया* और जीमें कहा कि ऐसेही मेरा दिल ठण्डा रहे फिर नाक खेंचकर† अपना दुपट्टा उनके गलेमें डाल चौरीमें लेआई।

ब्राह्मण वेदमन्त्र उच्चारण करने लगे, अग्निमें आहुति पड़ने लगी, रावजीका हाथ उमादेके हाथसे जोड़ा गया, उमादे आगे हुई और रावजी पीछे चले। तीन बार अग्निके चारोंओर फिरे। तब स्त्रियां गाने लगीं—

पहले फेरे बाई काकारी भतीजी,
दूजे फेरे बाई मामारी भानजी,
तीजे फेरे बाई भूआरी भतीजी,

चौथे फेरेमें रावजी आगे होगये और उमादे उनके पीछे चलने

---

* जैसे वरकी माता उसे दूध पिलाती है, वैसेही सास उसके माथे पर दही लगाती है, अर्थात् उसे अपनी कन्याका वर मान लेती है। कहावत है कि दहीकी बात सही।

† यह भी एक रीति विवाह की है।

लगो। तब स्त्रियोंने यह पिछला अन्तरा गाकर अपना गीत पूरा किया—

चौथे फेरे बाई हुई रे पराई।¶

गीत सुनतेही माता और बहनोंका दिल भर आया आंखोंसे आंसू टपकने लगे कि अब उमादे पराई होगई। इस प्रकार यह विवाह बैशाख सुदी ३ संवत् १५८३ की रातको हुआ।

रङ्गमें भङ्ग।

विवाह होजानेके बाद कन्या अपने महलमें चलीगई। बड़ी बड़ी स्त्रियां इधर उधर खिसक गईं। बधूकी सहेलियां रावजीको महलकी ओर लेचलीं। राहमें एक जगह गाना होरहा था, कितनी सुन्दरियां मिलजुल कर गारही थीं। रावजी चलते चलते वहां फिसल पड़े उनके गाने और रूप रंगने रावजी पर जादू कर दिया। वहीं डटगये, खवासें दौड़ीं एकने चान्दनी दूसरीने सोजनी और तीसरीने मसनद लगादी, चौथीने तकिये लगादिये, पांच सातने मिलकर शामियाना खड़ा कर दिया। राव मालदेव लट्टू होकर वहीं बैठगये, दो खवासें दायें बायें मोरछल लेकर खड़ी होगईं दो चंवर हिलाने और पंखा झलने लगीं। गर्मियोंकी सुहानी रात थी, चान्दनी छिटकी हुई थी, ठण्डी हवा चलरही थी, भीनी भीनी बू चारोंओर फैली हुई थी। रावजी उस परिस्तानमें इन्द्र बनकर

¶ गीतका मतलब यह है—पिता लड़कीकी सगाई करके और माता जमाईके सिर पर दही लगाकर लड़की उसे दे चुकती है तब वेद और शास्त्रकी विधिसे उसका विवाह होता है। उस समय उस पर चचा मामा और फूफीका अधिकार रह जाता है। चचा को कुछ आपत्ति हो तो पहले फेरे तक उसे प्रगट कर सकता है मामा दूसरे फेरे तक और फूफी तीसरे तक। चौथे फेरेमें कन्या पराई होजाती है फिर किसीका कुछ दावा नहीं चलता।

बैठगयी। गायनें चुप थीं, सामने कुछ फासिले पर रूपवती पातरें नाचनेको तैयार थीं।

कलालियोंमेंसे चन्द्रज्योति नामकी एक सुन्दरीने आगे बढ़कर रावजीको सलाम किया. और, ओजनोसे कुछ हटकर बैठी, गाने-वालियोंसे इशारा किया कि हां—"दारूड़ो दाखांरो।"

बस तबलेपर थाप पड़ी और सुरीली गानेवालियां ऊंचे और मीठे सुरोंसे गाने लगीं—

भरला ए! सुवड़कलालि—दारूड़ो दाखांरो
पीवनवालो लाखांरो।

चन्द्रज्योतिने पन्ने के हरे प्यालेमें लाल शराब भरकर हंसते हुए हाथ बढ़ाकर रावजीको भेट की। उन्होंने बड़े प्रेमसे लेकर पोली और प्याला अशरफियोंसे भर कर लौटा दिया। चन्द्र-ज्योतिने उठकर सलाम किया और अपने गलेका चन्द्रहार तोड़कर उसके मोती वार वार कर गानेवालियोंकी ओर फेंकने लगी। गायनें सोरठके सुरोंमें गाने लगीं—

(१) ब्रज देसां, चन्दन वनां, मेरु पहाड़ां मोड़।
गरुड़ खगां लंका गढ़ां, राजकुलां राठौड़॥
दारूड़ो दाखांरो—

चन्द्रज्योतिने फिर प्याला भरकर रावजीको दिया और गायनें गाने लगीं।

(२) दारू पीवो रण चढ़ो, राता राखो नैन
बैरी थारा जलमरे, सुख पावेला सैन,
दारूड़ो दाखांरो—

---

(१) इस दोहेमें राठौर घरानेकी प्रशंसा है—देशोंमें ब्रज, वनोंमें चन्दन पहाड़ोंमें मेरु पचियोंमें गरुड़ और किलोंमें लंका मोड़ अर्थात ताज है वैसेही सब राजघरानोंमें राठौड़ घराना सब का ताज है।

(२) यह दोहा शराब पीनेका उत्साह दिलाता है, अर्थात्—

(३) दारू दिल्ली आगरो, दारू बीकानेर
दारू पीवो साहबा, सौरुपयां रो फेर,
दारूड़ी दाखांरो—
(४) सोरठ रो दोहो भलो, कपड़ो भलो सपेत
नारी तो निबली भली, घोड़ो भलो कुमैत,
दारूड़ी दाखांरो—
भरला ए! सुघड़ कलाल।

इस गाने बजाने और कलालियोंके लुभाने रिझानेने रावजीका दिल छीन लिया। उसपर नर्तकियोंके गाने और बजानेने और भी सितम ढाया। रावजी उनके हाव भावमें उलझ कर रानीको भूल गये।

उधर नईवधू उमादे बैठी रावजीको प्रतीक्षा कर रही थी, कितनीही बान्दियां उनके बुलानेको गई, पर रावजी उस जलसेको छोड़ कर उठनाही नहीं चाहते थे और रात कम रही जाती थी।

रानीने इस वार अपनी उस चपल सहेली भारेलीसे कहा कि अब रावजीको लाना तेराही काम है। उसने कहा कि रावजी इस समय आपेमें नहीं हैं मुझे न भेजिये, पर उमादेने न माना, उसीको भेजा।

रानीके यहां भी महफिल सजी हुई थी, गायनें तैयार बैठी थीं, शराब और गजक तैयार थी, केवल रावजीके आनेकी देर

"शराब पिओ और लड़नेको चढ़ो, आंखें लाल रखो जिससे तुम्हारे शत्रु जल मरें और सेन अर्थात् मित्र प्रसन्न हों,

(३) यह दोहा शराबकी प्रशंसामें है—शराबही दिल्ली आगरा है और शराबही बीकानेर है, हे साहब, शराब पीजिये इसका एक एक फेर (दौर) सौ सौ रुपयेका है।

(४) इस दोहेमें अच्छी अच्छी चीजें बताई हैं—सोरठका दोहा सफेद कपड़ा, सुकुमारी स्त्री और कुमैत घोड़ा अच्छा होता है।

थी। रानीने भारेलीके जानेसे रावजीको आया समझ कर गाने-वालियोंको इशारा किया, वह ऊंचे सुरोंमें गाने लगीं।

महलां पधारो महाराज हो।
दारूरा मारू * महलां पधारो महाराजहो॥
कदरी ओऊं छूं सेजां बाटहो—दारूरा मारू०

उमादे यह ठीक अवसरका गीत सुनकर कुछ मुसकुराई और फिर उसने लजाकर नीची आखें करलीं। गानेवालियोंने भाटी वंशकी प्रशन्सामें यह दोहा गाया।

§ मथुरा पूंगल प्राग मरु लाहोरी भटनेर।
देरावर गढ़ गंजनो नौमो जैसलमेर॥
महलां पधारो महाराज हो।

सहेलियोंने कुछ रुपये उमादे परसे वारकर गायनोंको दिये, और उन्होंने यह दूसरा गीत आरम्भ किया—

† रंग माणो म्हारा राव !
तारां छाई रात ढोला फूलां छाई सेज॥
गोरी छायो है रूप ढोला बेगा बेगा आव।
ओ रंग माणो म्हारा राव।

इतनेमें एक खवासने आकर कहा कि वहां तो रावजी नशेमें चूर बैठे हैं और "दारूड़ो दाखांरो" गवाया जाता है। यह सुनकर गानेवालियोंने यहां भी वही गीत आरम्भ कर दिया पर अन्तरे पलट दिये—

---

* महाराज महलोंमें पधारो। हे मदिराके रसिया महलोंमें पधारो मैं बहुत देरसे सेजों पर तुम्हारी प्रतीक्षा कररही हूं।

§ मथुरा पुगल प्रयाग मारवाड़ लाहोर भटनेर देरावर गजनी और जैसलमेर यह नौ देश भाटियोंके हैं।

† मेरे राव आनन्द कीजिये, रात तारोंसे सेज फूलोंसे और सुन्दरी रूपसे छाई हुई है, प्यारे जल्द आकर सुख लूटो।

*भर ला ए सुवड़ कलालि दारूड़ी दाखांरो।
सोनेरी भट्ठी करूं रूपेरी घड़नार
हाथ पियालो धन खड़ी पीवो राजकुमार।
दारूड़ी दाखांरो—

(१) आम फले परवारसों, मह्रु फले पत खोय,
तिणरो रस साजन पिवे, लाज कठाथी होय,
दारूड़ी दाखांरो—

(२) गैलां गैलां भूलियां मैंला पड़ी पुकार,
आवणरी बेलां नहीं अलबेला राजकुमार,
दारूड़ी दाखांरो—

उधर चंचल भारेली कलबल करती हुई इस ढंगसे रावजीके पास पहुंचो कि रावजी जवानी और शराब की मस्तोमें उसेही रानी समझ कर उसके साथ चलदिये। वह भी उन्हें अपने मकानको ओर लेगई। रानी उमादे यह सुनकर सन्न होगई और उसकी गायनें गाने लगीं—

---

* हे सुवर कलाली अंगूरी शराब भरला, सोनेकी भट्ठी और चान्दीका भबका बनाऊं। रानी अपने हाथमें प्याला लिये खड़ी कहती है राजकुमार तुम पियो।

(१) यह मदिराकी निन्दामें है—आम पत्तोंके साथ फलता है औ र महुआ पत (पत्ते और इज्जत) खोकर, उसका रस साजन पीता है, फिर उसे लज्जा कैसे हो अर्थात् महुआ पत्ते खोकर नंगा होकर फलता है उसकी शराबमें लज्जा कहां। फूल फल आनेके समय महुएके पत्ते झड़जाते हैं और आम पत्तोंकी झुरमुटमें फलता है इससे चोरी कुछ छिपी रहती है।

(२) महलोंमें पुकार पड़ी कि मतवाले गली गली भटकते फिर रहे हैं अलबेले राजकुमार को आनेका अवसर नहीं।

(१) भरला ए सुघड़ कलालि दारूड़ो दाखांरो,
पहलां तो छीकलाली म्हारा मारूजीरी भायली
अब छै आलीजारी घरनार,
दारूड़ो दाखांरो—
(२) बीजलियां माडेचियां ऊपर ले रलियां
परदेसांरा साजना पतीजे मिलियां।
दारूड़ो दाखांरो—
(३) लड़री लीनी ऊनने बांधी चरै कपास।
दासी दीनी दायजे पज गई पिउरै पास॥
दारूड़ो दाखांरो।

यह सुनकर उमादेको बड़ा दुःख हुआ। उसने गानेवालियों को चुप कर दिया। जो थाल आरतीके लिये उसने सजाया था और वह दीपकोंसे जगमगा रहा था उसने उसे औंधा दिया और पलंगपर जाकर पड़ रही। महलमें सन्नाटा होगया। उस समय जो विचार उसके जीमें उत्पन्न होते थे उसीका जी जानता था।

सवेरा हुआ रावजीका नशा उतरा। देखा रातको जिसे उन्होंने रानी समझा था वह पानीकी झारी और चिलमची लिये एक बड़े महलकी ओर जारही है। उन्हें अपनी भूलकी खबर हुई। उसी समय गरमाये हुए महलमें गये पर वहां जाकर वह दशा देखी कि कुछ करते न बना।—

(१) पहलेतो कलाली मेरे प्यारेकी आशना थी पर अब तो उस आलीजाहकी घरवाली होगई है।

(२) माड अर्थात् जैसलमेर देशमें जो बिजलियां चमकती हैं वह ऊपरही ऊपर चली जाती हैं ऐसे ही परदेशी सज्जन जब मिलें तब मन पतियाता है। जैसलमेरमें अनेक वार वारिशकी पूरी आशा होने परभी वर्षा नहीं होती।

(३) भेड़ ली तो थी ऊनके लिये पर अब वह बंधी हुई कपास चरती है। दासी दहेजमें दी गई थी वह पियासे हिलमिल गई।

मान गुमानन कामिनी ऊमादे बड़ भाग।
रूठी बैठी सेजमें मालदेव पियत्याग॥

वह रावजीको देखके उठी पर कुछ न बोली।—

भौंहा चाप चढ़ायने नैनारा सर जोड़।
कर मरोड़ पिव सौंखड़ी लड़न मतै मुख मोड़॥

खवासें दूर दूर चुप खड़ी थीं, भारेलीका लङ्ग सूख रहा था, पर गायनें बन्द न हुईं, वह गाने लगीं,—

मधू छकिया महाराज
थाने किणी पियाई दारूड़ी॥

रावजीने नशेमें होनेका बहाना करके रानीको बहुत मनाया, पर वह न मानी। गानेवालियोंसे कहकर भी मनानेके बहुतसे गीत गवाये पर कुछ फल न हुआ। इस झमेलेमें बहुत दिन चढ़ गया। अन्तमें रावजी मनानेकी बात फिरपर छोड़ कर महलसे निकले, उसी समय उनके सरदार भी रावलजीके पाससे उठ गये।

रावजी फिर महलमें जाकर जोखोंमें पड़ना नहीं चाहते थे, बाहरहीसे बिदाके लिये कहलाने लगे। रावलजी भी यही चाहते थे कि भेद न खुले और बिदाई होजाय।

रानी उमादे रावजीके साथ जाने पर राजी नहीं होती थी। राघोजी जोशीने आकर कहा कि कल तुम्हे रावजीको जान प्यारी थी, क्या आज नहीं है? अब भी रावजीके प्राणका भय नहीं गया है, यह समय रूठनेका नहीं है।

यह सुनकर रानी नर्म हुई। हिन्दू राजाकी लड़की है और हिन्दू धर्मको मानती है जो स्त्रियोंको पतिपूजा सिखाता है। वह माताके पास गई, कुछ देर उससे और सखियोंसे बिछड़नेके लिये रोती रही और फिर दो घूंट पानी पीकर चुपचाप सुखपालमें बैठ गई।

रावजीके कहनेसे रानी उमादेने भारेलीको भी एक अलग रथमें बिठा लिया। राघोजी जोशी भी पहुंचानेके बहाने साथ होगये।

उसके बेटे वरहूजी पहलेहीसे रावजीके लशकरमें पहुंच गये थे, क्योंकि इन दोनों को रावलजीकी ओरसे आशंका थी। रावलजी को यह सन्देह होगया था कि इन्होंने हमारा भेद जानकर रावजी को सावधान करदिया। अन्तमें बरात बिदा हुई और जोधपुर दिन दिन निकट होने लगा।

रानीकी हठ।

रानी उमादे अपनी हठ पर दृढ़ है। रावजीसे न बोलती है न उन्हें अपने पास बैठने देतीहै। रावजी आते हैं तो वह उन्हें ताजीम देकर अलग बैठ जाती है। रावजी उसके रूप और अवस्था पर मोहित होकर चाहते हैं कि कुछ न हो तो जरा यह हंसकर बोल ही ले। पर वह ऐसी पट्टी पढ़ीही न थी। इसी प्रकार वह भारेलीसे भी नहीं बोलतीथी। भारेली अपने मामूली काम किये जाती थी और आंख बचाकर रावजीसे मिल लेती थी और राघोजीको साक्षी बनाकर रावजीसे कहती थी कि मैंने जहां तक बना आपकी भलाईकी है पर बाईजी मुझसे नाराज हैं, मेरी लज्जा आपके हाथ है। राघोजीने रावजीसे कहा, कि निस्सन्देह भारेलीके कारणही मैं आपकी एक सेवा कर सका और श्रीमान की शरणमें आगया, रावलजी मुझसे वैसेही अप्रसन्न हैं जैसे आपसे बाईजी।

रावजी जानते थे कि राघोजीनेही रावलजीके बुरे विचारोंका पता दिया और राघोजीको भारेलीने भेद दिया था, पर यह नहीं जानते थे कि भारेलीको कैसे पता लगा। इसका हाल तो जब मालुम होता कि रानी उमादे अपने मुंहसे कुछ कहती, वह भारेली और रावजीसे ऐसी बेजार थी कि मुंहसे कुछ बोलती ही न थी। वह यह जानती थी कि इस प्रकार रूठे रहना अच्छा नहीं, पर उसका दिल नहीं मानता था, इसलिये वह अपने मानमेंही मस्त बैठी थी।

भारेली भी उमाकी चुपसे बड़ी भयभीत थी। एक दिन साहस करके वह उसके पैरों पर गिर पड़ी और गिड़गिड़ा कर कहने लगी, कि बाईजी आपका विचार जो हो सो हो पर मैंने तो उस समयभी आपकी भलाईहीकी है जब आपने मुझे रावजीके लानेको भेजा था। क्योंकि महलसे बाहर निकलतेही मुझे ऐसा सन्देह हुआ था कि कोई जनाना वेशमें रावजीको ताक रहा है, इसलिये मैं उनको आपके महलमें लाना उचित न समझकर अपने घर लेगई। रावजी नशेमें थे पड़कर सोरहे और मैं रातभर कटार लिये उनकी रक्षा करती रही। जब वह जागे तो आपकी सेवामें हाजिर होगई, इसमें यदि कुछ मेरा दोष हो तो क्षमा करें। उमादेने यह सब बातें सुन तो लीं, पर कुछ बोली नहीं। भारेली खिसियानी होकर चली गई।

बरात जोधपुर पहुंच गई। दीवान और प्रधान बड़ी धूम धाम से स्वागतको आये, कोसों तक सेना और तमाशाइयोंका तांता लग गया। किलेमें जनाने खानेकी ओरसे गाजे बाजेके साथ बड़बेवड़ा अर्थात् फूल पत्तोंसे सजा जलसे भरा कलश आया। रावजी उसमें अशरफियां डालकर अन्दर चले गये। वहां उनकी माता देवड़ी पद्माजीने बेटे और बहू पर अशरफियां न्योछावर कीं। बेटे और बहूने उनके चरण छुए, भीतर जाकर देवी देवताओंकी पूजाकी गई और उमादे एक अच्छे महलमें उतारी गई।

रावजीके रानियां भी और थीं और उनके बाल बच्चे भीथे। पाटरानी अर्थात् प्रधान रानी कछवाही लाछल दे आम्बेरके राजा भीम की बेटी थी। रावजीका बड़ा बेटा राम उसीसे उत्पन्न हुआथा झाली रानी स्वरूप दे सब रानियोंमें रूपवती थी, पर उमादेके बराबर न थी रावजीके जीपर उसीने अधिक अधिकार जमारखा था। उमादे से रावजीके विवाहकी बात सुनकर उसे बड़ा खटका हुआ था, उसे भय हुआ कि रावजी उसीके वशीभूत होजायंगे पर जब उसने सुना कि वह पहलीही रातमें रूठगई और यहां आकर भी वही

हालत है तो उसकी जानमें जान आई।

मातासे बिदा होकर रावजी झाली रानी स्वरूपदेके महलमें गये। उसने बड़े हर्षसे दौड़कर रावजीके वारने लिये और गले का हार तोड़कर उनपरसे मोती न्योछावर किये। रावजी उमादे के मान और घमण्डसे बड़े दुःखित थे। झाली रानीके आदर सत्कारसे बहुत प्रसन्न हुए और उसे विवाहका सब हाल सुनाने लगे। स्वरूपदे रानीने कहा—"आज्ञा हो तो मैं भी एक दिन भट्टानीजीसे मिल आऊं।

रावजी—भट्टानी क्या है एक भाटा (पत्थर) है।

स्वरूपदे—(हंसकर) वाह, आपने भला आदर किया। भाटा क्यों है वह भट्टानी है।

रावजी—हां भट्टानी तो है पर भाटेकी बनी है, मानकी मूर्ति है।

स्वरूपदे—वाह आपको उसका मान भी न भाया!

रावजी—मानकी भी एक सीमा होती है।

स्वरूपदे—भला जो एक बड़े घरकी बेटी हो एक बड़े रावकी रानी हो नवयुवती और नई बहू हो, रूपवती हो, उसके घमण्ड की क्या सीमा होसकती है? मुझ जैसी गरीब घरकी कोई क्या घमण्ड करेगी?

रावजी—यह सब ठीक है, पर स्वभावकी बड़ी कड़ी है, तुम जाकर प्रसन्न न होगी।

स्वरूपदे—अच्छा तो है कि आप भी पधारें और हम सब साथ चलें।

रावजी (हंसकर)—ठीक है, तुम्हारे साथ चलकर अपमान करावें!

स्वरूपदे—वह क्या उसका बाप भी आपका अपमान नहीं कर सकता।

रावजी—स्त्री अपने पतिका बहुत कुछ अपमान कर सकती है,

यदि वह तुम्हारे सामने मेरी ओर ध्यान ही न दे तो मेरा अपमान हुआ कि नहीं ?

स्वरूपदे—जब आप इतनी सी बातमें अपमान समझेंगे तो उसका मान कैसे निबहेगा ?

रावजी—हां यही देखना है।

उमादे और उसकी सौतें।

स्वरूपदेने सब रानियोंसे कहला दिया। दूसरे दिन सब रानियां बन ठनकर उमादेसे मिलने गईं। उमादेने उठकर लाछ-लदेको सबसे ऊपर बिठाया और उसीसे अधिक बातचीत की। बाकी सब रानियोंसे साधारण रीतिसे मिली और बहुत कम बात चीत की। इसलिये वह बहुत कुढ़ीं और उसके रूपको देखकर तो सब जल गईं।

लौटनेपर लाछलदे तो अपने महलमें चली गई। बाकी रानियां स्वरूपदेके महलमें जमा होकर सलाह करने लगीं। उन्होंने निश्चय किया कि उमादे तो रावजीसे रूठी है. रावजीको भी उससे रुठा देना चाहिये जिससे वह उसके महलमें जाना छोड़ दें। क्यों कि उसने कभी हंसकर यदि रावजीकी ओर देख लिया तो वह उसीके होजायंगे।

इतनेमें रावजी आगये। उन्होंने पूछा—कहो, भटियानीजी कैसी है ?

स्वरूपदे—महाराज बहुत अच्छी है, पर अलहड़ बछेरी है।

रावजी—तब तो दुलत्तियां भी झाड़ती होगी ?

स्वरूपदे—हमें इससे क्या, जो पास जाय वह लात खाय।

राव—जिसे दुलत्तियां खाना होंगी वही पास जायगा।

स्वरूपदे—सौ बातकी एक बात तो यही है।

तब रावजीने फिर दूसरी रानियोंसे पूछा। सौसोदिनी रानी पार्वतीने कहा—महाराज वह बड़ी घमण्डन है, अपने बराबर हमें क्या वह माजीको भी नहीं समझती।

झालीरानी हीरांदे बोली—महाराज कुछ न पूछिये अपने सिवा वह सबको पशु समझती है।

आहड़ी रानी लाछीयाईने कहा—मैं तो जाकर पछताई उसकी मा ऐसी अनगढ बेटी न जाने कहांसे लाई। उसको आखोंमें न लाज है, न बातोंमें लोच है। मैं तो आपको उसके पास न जाने दूंगी।

सोगरी रानी लाडांने कहा—वह तो, मिजाजमें मरी जाती है. न आयेका आदर न गयेका मान, ऐसीके पास जाकर कोई क्या करे।

चौहान रानी ईंदा बोली—महाराज, मैंने स्वरूपवती भी देखीं लाडली भी देखीं पर उसका दमाग चला हुआ है। न जाने उसके गोरे शरीरमें कौन भूत घुस रहा है।

रानी राजबाईने कहा—गोरी चिट्टी है तो क्या, लक्षण तो दो कौड़ीकेभी नहीं। बड़ेघर आगई है नहीं तो सारा मान झड़जाता।

झाली रानी नौरंगदे बोली—जवानीके नशेमें दीवानी होरही है। यह नहीं जानती कि जवानी सबको चढ़ती है, अकेली उसे ही नहीं चढ़ी है। कल जवानी जाती रहेगी, सब बल निकल जायगा।

इन बातोंसे रावजीको भी क्रोध आगया। उन्होंने भी जाना कम कर दिया, कभी जाते तो उसके रूपको एक निगाह देखकर चले आते। उमा भी केवल ताजीमके लिये खड़ी होजाती और कुछ बात न करती।

रावजीके दो भट्टानी रानियां और थीं। उनसे वह उमाकी बात कुछ न करते। क्योंकि जानते थे कि वह उमाको निन्दा न

सुन सकेंगी। वह भी रावजीसे कुछ न कहतीं पर जीसे यही चाहती थीं कि रावजीका उमासे मेल होजाय। इससे मौका मिलने पर वह कछवाही रानी लाछलदेसे बोलीं कि उमादे लड़कपनके कारण अपनी हानि कर रही है, सौतोंके दाव पेचको नहीं जानती अबतो रावजी भी उसके पास कम जाते हैं। पर उसका स्वभाव अबतक न बदला। खैर वह तो नासमझ है पर रावजी समझदार होकर उससे क्यों रूठते हैं! लाछलदे बहुत भली रानी थी। उसने एक दिन अवसर पाकर रावजीसे कहा—अपनी नई लाडीके पास आना जाना क्यों कम कर दिया?

रावजी—मैं तो बराबर जाता था उसीने रूठकर काम खराब कर दिया।

लाछल—वह रूठी क्यों, इसका भेद मैं अबतक न जान सकी।

रावजी—भारिलीके कारण।

लाछल—फिर आप भारिलीको इतना क्यों मुंह लगाते हैं? उमाके बराबर वह नहीं है।

रावजी—मैं क्या करूं, उमाने ही उसको मेरे पास भेजा।

लाछल—ठीक है, पर भारिली भारिलीकी जगह रहे और उमा उमाकी जगह।

रावजी—मैं भी यही चाहता हूं, पर उमा नहीं चाहती। उसके जीका हालही नहीं मालूम नहीं होता कि वह क्या चाहती है, तुम जरा पता तो लगाओ।

लाछल—बहुत अच्छा, कोई अवसर आने दीजिये।

लाछलदेने यह सब बातें उमासे कहीं। उसने धन्यवाद किया। उमा कभी कभी लाछलसे मिलकर जी बहलाती थी और उसे जीजीबाई कहती थी। उसके पुत्र कुमार रामका भी बहुत लाड़ प्यार करती थी।

मनानेकी चेष्टा।

अगले वर्ष संवत् १५९४ में राव मालदेव दौरा करते हुए अज-मेर गये। वहां कुछ दिन किलेमें रहे जिसमें पहले बीसलदेव और पृथ्वीराज जैसे प्रसिद्ध महाराजोंका सिंहासन बिछता था। रावजी उसे अपने अधिकारमें देखकर एक रात इतराकर अपनी चौहान रानियोंसे कहने लगे कि इसे भलीभांति देख लो यह तुम्हारे बड़ोंकी राजधानी है।

रानियोंने कहा कि हम तो आपके अधीन हैं अपने बड़ोंकी होड़ नहीं कर सकतीं। वह जैसे थे उन्हें आपके बड़े भी जानतेही होंगे।

रावजी इस उत्तरसे पृथ्वीराज और संयोगिताकी घटनाका इशारा समझकर जीमें गुस्सा लेआये और झटपट जनानेसे बाहर निकल गये। उस समय काली काली घटाएं छाई हुई थीं, कुछ बूंदें भी पड़ रही थीं। रावजीकी आंखोंमें नशा दिलमें क्रोध और हाथमें खांडा था। आपने आवाज दी ड्योढ़ी पर कौन हाजिर है?

ईश्वरदास बारहटने आगे बढ़कर मुजरा किया और कहा—बड़ी खमा अन्नदाता, पृथ्वीनाथ पधारो, शुभचिन्तक हाजिर है।

रावजी—अभी आप जागते हैं? अच्छा कोई कहानी तो कहो।

ईश्वरदास—जो आज्ञा, बिराजिये।

रावजी बैठ गये। ईश्वरदासने कहानी शुरू की। बीच कहानी में उसने यह दोहा पढ़ा—

> मारवाड़ नर नीपजे नारी जैसलमेर।
> तुरी तो सिन्धां सांतरां करहल बीकानेर॥

अर्थात् मारवाड़में मर्द, जैसलमेरमें स्त्रियां, सिन्धमें घोड़े और बीकानेरमें ऊंट अच्छे होते हैं।

रावजी—बारहटजी! निस्सन्देह जैसलमेरमें स्त्रियां अच्छी होती हैं, पर हमें तो वहांकी स्त्रियोंसे कुछ लहना नहीं।

ईश्वरदास—क्यों अन्नदाता! यह क्या आज्ञा करते हैं? जैस-लमेरकी अच्छीसे अच्छी नारी उमादे—

रावजी—(बात काटकर) वह तो फेरोंकी रातसेही रूठी बैठी है।

ईश्वर०—आपसे नोज रूठे, चलिये अभी मेल कराटूं।

दोनो उमादेके महलकी ओर चले। रावजी चलते चलते रुककर ईश्वरदाससे बोले—बारहटजी, आप चलते तो हैं पर वह बोलेगी भी नहीं।

ईश्वर०—मैं चारण हूं। चारण मरेको बुला सकते हैं वह तो जीती हैं।

ड्योढ़ी पर पहुंचकर ईश्वरदासने रावजीको अपने पीछे बिठा लिया और उमादेसे कहलाया कि मैं रावजीके पाससे कुछ कहने आया हूं। उमादे परदेके पास आबैठी। ईश्वरदासने कहा—बाईजी मुजरा, बड़ी खमा।

उमादेने कुछ जवाब न दिया। ईश्वरदासने फिर कहा—बाईजी राजसे मेरा मुजरा।

इसका भी कुछ उत्तर न मिला। तब ईश्वरदाससे रावजीने धीरेसे कहा—मैं न कहता था कि वह न बोलेगी, मुर्दा बोले तो यह बोले।

ईश्वरदास—बाईजी! मैं भी आपहीके घराने(१)का हूं इसी लिये बाईजी बाईजी करता हूं। यदि ऐसा न होता तो तुम देखती कि कैसा तुम्हें और तुम्हारे घरानेको लजाता। यह क्या

(१) ईश्वरदास रोहड़िया जातिका चारण था, उसका पूर्वपुरुष मांगा भाटी था। रावजीके परदादा राव रायपालने बहुतसा धन देकर उसे अपना चारण बनाया था।

बात है कि मैं तो मुजरा मुजरा करता हूं और तुम उत्तर तक नहीं देतीं ?

उमादे इस पर भी चुपही रही।

ईश्वरदासने फिर कहा—बाईजी, आपने सुना होगा कि आप के बड़ोंमें एक रावल दूदाजी थे। वह मुसलमानोंसे लड़कर काम आये थे। उनकी रानीने चारण छूंपाजीसे कहा कि बाबाजी, रावलजीका सिर लादो तो मैं सती हूं। छूंपाजी रणस्थलमें गये वहां कटे सिरोंके ढेरमें रावलजीका सिर पहचाना नहीं जाता था। तब छूंपाने रावलजीकी प्रशंसा आरम्भ की जिसे सुनकर रावलजी का सिर हंस पड़ा। छूंपा उसे पहचानकर रानीके पास लेआया। इसके विषयमें अबतक यह दोहा प्रसिद्ध है—

चारण छूंपे सेवियो साहब दुर्जन सल्ल।
बिरदातां सिर बोलियो गीतां दूहां गल्ल।

अर्थात् छूंपा चारणने अपने स्वामी दूदाकी सेवा की थी इससे दूदाका सिर अपनी प्रशंसा सुनकर बोला। यह बात गीतों और दोहोंमें प्रसिद्ध है। सो बाईजी, तुम भी उसी रावल दूदाजीके घरानेकी हो, वह मरकर बोला तुम जीती भी नहीं बोलतीं ? क्या बड़ोंका रक्त तुम्हारे शरीरमें नहीं दौड़ता ?

उमादे—(जोशमें आकर) बाबाजी, मैं भी यही देखना चाहती थी कि तुम्हारी बाणीमें कितना प्रभाव है। कहो, क्या कहते हो और क्यों आये हो ?

ईश्वरदास—तुम्हारा जन्म चन्द्रवंशमें हुआ है, तुम स्वयं भी चांदसी उजाली हो। तुम्हारी सौतें भी कहती हैं कि उमादे चांद मेंसे चीरकर निकाली गई है पर कुछ कालिमा लगी हुई है। वह कलौंस क्या है यही पूछने आया हूं।

उमा—उन्हींसे पूछो।

ईश्वर—वह तो साफ साफ कुछ नहीं कहतीं ; पर सुना है कि तुम रावजीसे रूठ रही हो इसीको वह कलौंस समझ रही हैं।

उमादे—यदि ऐसा है तो उनके लिये सुखकी बात है।

ईश्वर—तुम भी भली हो सोतोंको सुखी और पतिको दुःखी रखती हो।

उमा—रावजीको बीबी बांदीकी पहचान नहीं।

ईश्वर—रानी रानी है और बांदी बांदी।

उमा—तुम इसके लिये बचन देसकते हो?

ईश्वर—हां।

उमा—अच्छा हाथ बढ़ाओ।

ईश्वरदासने रावजीका हाथ पकड़कर परदेमें कर दिया। उमा ने देखकर कहा—आह! यह तो वही कठोर हाथ है जिसने मेरे साथ हथलेवा बांधा था।

ईश्वर—तो और हाथ कहांसे आवे।

उमादे यह सुनकर भीतर चली गई और रावजी भी उठ गये पर बारहटजी वहीं बैठे रहे। रात बीत गई, दिन निकल आया; दोपहर दिन चढ़ गया पर बारहटजीका आसन वहीं जमा रहा। उमाने उनके लिये भोजनका थाल भेजा पर उन्होंने छुआ भी नहीं। कहा—बाईजीने मेरा जरा लिहाज न किया मुझे तो उनका बड़ा भरोसा था। इसीसे रावजीको साथ लाया था। अब मुझे यहां मरना है। क्या बाईजीने कभी चारणोंके चान्दी करनेकी बात नहीं सुनी? चारण यदि किसी झगड़ेमें पड़ते हैं और राजपूत उनकी बात नहीं मानते तो अपनी बात रखनेके लिये चांदी अर्थात् आत्म-हत्या कर लेते हैं। उमादेने कहा—क्या आप मुझ पर चान्दी करेंगे?

ईश्वर—अवश्य करूंगा नहीं तो रावजीको क्या मुंह दिखाऊंगा?

उमा—तो आपने मुझे बचन क्यों न दिया?

ईश्वर—बचन रानी राजाके झगड़ेमें कौन दे? बीचवालेका काम मेल करा देना है, सो मैं रावजीको लेही आया था।

उमा—उन्हें लानेसे क्या हुआ?

ईश्वर—और कुछ तो नहीं, मेरे प्राण संकटमें पड़गये।

उमा—आप भोजन तो करें।

ईश्वर—अगले जन्ममें करूंगा।

इतनेमें भारेलीने आकर कहा—बारहटजी, बाईजीने भी भोजन नहीं किया।

ईश्वर—वह भोजन करें, उन्हें किसने रोका है?

भारेली—भला कभी ऐसा हुआ है कि चरण तो ड्योढ़ी पर भूखा बैठा हो और कोई राजपूत जाई भोजन करले!

ईश्वर—यदि बाईजी चारणोंका ऐसा आदर करती हैं तो उनकी बात क्यों नहीं मानतीं?

भारेली—आप क्या कहते हैं?

ईश्वर—मैं कहता हूं कि बाईजी रावजीसे मान छोड़दें।

उमा—रावजी भी कुछ करेंगे या नहीं?

ईश्वर—जो तुम कहोगी सो करेंगे। हाथ जोड़नेको कहोगी हाथ जोड़ेंगे, पांव पड़नेको कहोगी पांव पड़ेंगे, जैसे मानोगी मनायेंगे। मैंने सब ठीक कर लिया है।

उमा—बाबाजी, आपने समझदार होकर यह क्या कहा! अपने धर्म और कुलकी रीति से क्या ऐसा होसकता है? रावजी मेरे स्वामी हैं मैं उनकी दासी हूं, भला मैं उनसे यह कह सकती हूँ कि वह ऐसा करें या वैसा करें। मैं तो रूठनेमें भी उनसे सब प्रकार प्रसन्न हूँ और वह भी मेरा पूरा पूरा आदर करते हैं। इसीसे मैं जीती हूँ, क्योंकि मैं मानको प्राणसे भी ज्यादा समझती हूं।

ईश्वर—धन्य बाईजी धन्य! पतिव्रता स्त्रियोंका ऐसाही धर्म है।

उमा—बाबाजी यह धर्म अन्त तक निभ जाय तो धन्य कहना नहीं तो क्या धन्य।

ईश्वर—हां, तो फिर तुम अब क्या चाहती हो?

उमा—कुछ नहीं ; तुम भोजन करो तो मैं भी करूं।

ईश्वर—तुम भोजन करो, मैं तो तब खाऊंगा कि जब तुम मेरा कहना करोगी।

उमा—कहो क्या कहना करूं।

ईश्वर—रावजीसे रूठना छोड़ दो।

उमा—मेरा तो जी नहीं चाहता कि जो बात मैंने स्वीकार करली उसे छोड़ दूं, यह एक दम मेरे स्वभावके विरुद्ध है, पर आप के अनुरोधसे लाचार हूँ।

ईश्वर—ऐसा हो तो रावजी भी वही करेंगे जो तुम चाहोगी।

उमा—मैं कुछ नहीं कहती रावजीकोसब बातोंका अधिकार है। पर हां, कोई बात स्वभाव विरुद्ध देखूंगी तो फिर अलग हो जाऊंगी।

ईश्वर—हां ठीक है ; कहो तो रावजी को लेआऊं और तुम चलो तो सुखपाल और अर्दली मंगाऊं।

उमा—अभी नहीं रातको चलूँगी, आप भोजन करें।

ईश्वर—पहले मैं रावजीसे मिल आऊं।

बारहट ईश्वरदास रावजीके पास चला गया और उमादेने फिर से भोजन बनवाकर उसके डेरे पर भेज दिया।

फिर मान।

रावजी प्रसन्न हैं रात होने की घड़ियां गिन रहे हैं। राजभवन सज रहा है, सन्ध्याहीसे सभा लगती है, गायनें और पातरें एकत्रहो जाती हैं नाचगाना आरम्भ होता है, शराब चलती है। उमादेको बुलाने बांदी पर बांदी आती है, रानी उमादे अभी शृंगारही कर रही है। मांगमें मोती भरे जारहे हैं, जी अब भी रावजीकी ओर नहीं है, मान अलग मचल रहा है स्वभावने

हठ नहीं छोड़ा है, जाने न जानेका अभी निश्चय तक नहीं हुआ, इतनेमें फिर बुलावा आया। उमा फिर उखड़ गई। भारिलीसे बोली, जाकर कह दे आते आते आवेंगे ऐसी जल्दी क्या है? भारिली सुनकर सहम गई, कांप कर कहने लगी—बाईजीराज! क्या अन्धेर करती हो, मुझे क्यों भेजती हो, क्या और लौंडियां नहीं हैं? उमादेने कहा, तुझसी एक नहीं, तू यह उत्तर देकर जल्द चली आ फिर मेरे साथ चलना।

भारिली लाचार गई। रावजीकी दृष्टि ज्योंही उसपर पड़ी वह रानीको भूल गये, उसे हाथ पकड़कर बिठा लिया। वह बहुत कहती रही कि जो मैं कहने आई हूँ वह सुनिये और मुझे जाने दीजिये नहीं तो रंगमें भंग पड़ जायगी। रावजी बोले, कुछ नहीं होगा, महारानीने तुझे मेरी दिल्लगीके लियेही भेजा है वह आवे जब तक यहीं रह, फिर चली जाना। रावजी शराबकी धुनमें न उसकी कुछ सुनते हैं और न उसे जाने देते हैं, यहां तक कि पातरों और गायनोंको भी वहांसे हटा देते हैं। कुछ देर पीछे रानी उमादे वहां पहुंची। देखा, रावजी भारिलीको लिये बैठे हैं, उसी दमही लौट गई। जीमें कहा अच्छा हुआ, मैं भी चाहती थी कि मेरा मान बना रहे।

उधर भारिली रानीको देखकर घबराकर उठी और झरोखेसे नीचे कूद पड़ी। बाघा कोटड़िया पहरे पर था, गहनोंकी झनकार सुनकर उसने ऊपरको देखा और भारिलीको गिरते गिरते ऊपर ही रोक लिया। उससे पूछने लगा, तू कौन है, परिस्तानकी परी है या इन्द्रके अखाड़ेकी अप्सरा? भारिली बोली, चुप, अभी यहांसे मुझे निकालले चल, नहीं तो तेरी और मेरी जानोंकी खैर नहीं! बाघाने कहा, मैं रावजीका नौकर हूं, बिना आज्ञा कैसे जासकता हूं? पहरा पूरा करलूं तब जो कहोगी सो करूंगा। भारिली बोली, खैर तू मुझे अपने डेरेपर छोड़ आ, फिर जैसा होगा देखा जायगा। बाघाका डेरा

ईश्वरदासके पासही था, भारेलीको देखतेही उसने पहचान लिया। झट रावजीके पास गया, वह चकित बैठे थे, ईश्वरदासको देखकर बहुत उदास होकर बोले—मेरे हाथोंसे तो दोनोही तोते उड़गये।

ईश्वर—एक तो उड़ जानेकेही योग्य था, उसकी चिन्ता न करें, बाघा कोटड़ियासे कहिये कि उसे जैसलमेर छोड़ आवे, नहीं तो दूसरा तोता आपके हाथ न आयगा।

रावजी—अच्छा यदि आपकी यही इच्छा है तो बाघासे कहदो।

ईश्वरदासने उसी समय जाकर भारेलीको एक बेगवती सांडनी पर चढ़ाकर बाघाकी रचामें जैसलमेरको भेज दिया और वापस आकर रावजीको खबर दी।

रावजी तब बोले—अब तो भट्टानी राजी होगी।

ईश्वर—यह मैं नहीं कह सकता क्योंकि आप उनका मिजाज जानते हैं।

रावजी—हां इसीलिये तो मैं उसके पास गया नहीं; आप जाकर देखिये अगर होसके तो मना लाइये।

ईश्वर—अब उनका आना कठिन है है पर मैं जाता हूं।

ईश्वरदासने जाकर देखा कि राजभवन सूना पड़ा है और रानी बुर्जमें जाबैठी हैं। सखियोंने सफेद चान्दनी तान कर परदा कर दिया है। लौंडियां बांदियां पहरे पर हैं। उड़दा बेगणे (१) नंगी तलवारें लिये खड़ी हैं। ईश्वरदासने निकट जानेका साहस न किया, दूरसे देखकर रावजीके पास लौट गया और उनसे सब हाल कहा।

रावजी—(बिगड़कर) क्या भट्टानी बुर्जमें जा बैठी! यह क्या किया?

ईश्वर—बुर्जका भाग्य खुलनेवाला था। आज उस पर वह तेज बरस रहा है जो वहां कभी पृथ्वीराज चौहानके राज्य सिंहासन पर भी न बरसा होगा। चान्दनीका परदा पड़ा है, नंगी तलवारों

(१) उर्दू बेगमें अर्थात सिपाही स्त्रियां।

का पहरा है, मेरी तो वहांतक जानेकी भी हिम्मत न हुई अधिक क्या कहूं।

रावजी—नंगी तलवारोंका पहरा है!

ईश्वर—हां महाराज; विश्वास न हो तो चलकर देख लीजिये।

रावजी—तब तो उसे मनाना कठिन है।

ईश्वर—बहुतही कठिन; रानीने मुझसे शर्त करली थी। आप ने अंधेर किया जो उनके स्वभावके विरुद्ध बात की, मेरे लिये भी कहने सुननेकी जगह न रखी।

रावजी—होनहार टलती नहीं। मैं भी अब बहुत पछताता हूं। पहले भी भारिलीके लियेही बिगाड़ हुआ था।

ईश्वर—वह तो गई, पाप कटा।

रावजी—इसका भी मुझे दुःखही रहेगा—

ईश्वर—(बात काटकर) अभी तो बाईजी दो चार दिन तक महलमें आती नहीं जान पड़तीं। उनके लिये क्या किया जाय?

रावजी—मैं तो कल चला जाऊंगा, मुझे बीकानेर पर चढ़ाई करना है, यहांका प्रबन्ध सब होचुका है। हुमायूं बादशाहके आने की खबर थी वह भी नहीं आया। फिर क्यों समय नष्ट किया जाय। तुम यहां रहो और इस बुर्जके पास कनातें खड़ी कराकर पहरे चौकीका प्रबन्ध करो। जब उसका मिजाज ठीक हो तो समझा बुझाकर जोधपुर ले आना, मैं किलेदारसे कह दूंगा वह सब प्रबन्ध कर देगा।

रावजी यह कहकर अगले दिन अजमेरसे चल दिये। दीवान उनकी आज्ञासे अजमेरका रामसर परगना रानी उमादेकी जागीर में लिखकर पट्टा उसके पास भेज देता है। किलेदार उसकी ड्योढ़ी पर परदे और तम्बूका प्रबन्ध करके संध्या सवेरे सलामको हाजिर होता है। अजमेरका हाकिम नित्य रानीकी ड्योढ़ी पर मुजरेको हाजिर होता है और बड़े बड़े काम रानीकी सलाहसे पूरे करता है। उमादेका नाम अब 'रूठीरानी' प्रसिद्ध होजाता है। वह बुर्ज भी

रूठी रानीका बुर्ज(१) कहलाने लगा जो आजतक उसी नामसे प्रसिद्ध है।

जोधपुर पहुंचकर राव मालदेवने सुना कि बंगालमें हुमायूं और शेरशाह सूरसे लड़ाई छिड़ गई और दिल्ली आगरा खाली पड़ा है। उन्होंने बीकानेरका खयाल छोड़कर पूरबकी ओर चढ़ाई की और हिन्दौन, बियाना तक फतह करते चले गये। वहांसे लौटकर संवत् १५९८ में बीकानेर भी जीत लिया।

इस बीचमें शेरशाह हुमायूंको सिन्धमें भगाकर आगरे पहुंचा। इधरसे वह सब राजा रईस और ठाकुर जिनके इलाके राव मालदेव ने लेलिये थे बीकानेरवालोंकी सरपरस्तीमें उसके पास गये और उसे रावजी पर चढ़ा लानेकी चेष्टा करने लगे। रावजीने उससे लड़नेको ८० हजार सवार जमा किये और बारहट ईश्वरदासको लिखा कि आप रूठीरानीको लेकर चले आइये और अजमेरके किलेमें अच्छी बन्दोबस्त करा दीजिये।

रूठी रानीने इस पर कहा—मुझे क्या डर पड़ा है। मैं राजपूतकी बेटी हूं, किले पर कोई चढ़ आवेगा तो मैं करमेती झाडी॰ की भांति आगमें जलकर नहीं मरूंगी, मर्दोंकी भांति लड़ूंगी। रावजीको लिख दो कि यह किला मेरे भरोसे पर छोड़ दें और बाकी राज्यका स्वयं प्रबन्ध करें।

रावजीने उत्तर दिया कि अजमेरमें तो हम शेरशाहसे लड़ेंगे। रानीको राजपूती दिखानेकी यदि ऐसीही इच्छा है तो जोधपुरका

---

(१) यह बुर्ज अजमेरके किलेमें दक्षिणकी ओर है।

॰ करमेती झाडी महाराणा सांगाकी रानी और विक्रमादित्य तथा उदयसिंहकी माता थी। जब गुजरातके बादशाह सुलतान बहादुरने संवत् १५९१ में चित्तोड़का किला जीता तो करमेती १३ हजार स्त्रियोंके साथ अपनी इज्जत बचानेके लिये चिता बना कर जल मरी।

किला हम उसे सौंपकर चले जायंगे, तुम उसे जल्द लेआओ। बारहटने रानीसे कहा—बाईजी! महाराजने आपकी बात स्वीकार की है, पर अजमेरके बदले जोधपुरका किला आपको सौंपा जायगा आप वहां चलिये. वह अपना घर है। अजमेर तो पराया है, कुछ ही दिनसे रावजीके हाथ आया है।

रानी—अच्छा, अजमेर न सही जोधपुरही सही, सवारीका प्रबन्ध करो, यदि यह अवसर न आजाता तो मैं यहांसे चलना नहीं चाहती थी।

सौतोंकी कुचेष्टा।

बारहटने हाकिम और किलेदारसे तैयारी करनेको कहा। इतनेमें जोधपुरसे स्वरूपदे झाली आदि रानियोंने एक बड़ी रिशवत बारहटजीके पास भेजकर कहलाया, जैसे हो इसबलाको वहीं रहने दो। अजमेर छोड़तेसमय भी आपसे यही बात कहीथी और अबतक आपने उस बातका ध्यान भी रखा यहां तक कि रावजीके कहने पर भी उसे नहीं लाये, अब भी तुम जैसे चाहो उसे रोको और रावजीको समझाओ। बारहटजी रिशवत पाकर निन्नानवेके फेरमें पड़ गये। पहले तो तैयारीको बहुत ताकीद करते थे अब चुप होगये और तैयारी ढीली पड़गई।

एक और नया गुल खिला। हुमायूँने जो शेर शाहसे हारकर सिन्धको गया था, रावजीकी लड़ाईकी तैयारी सुनकर एक वकील भेजा और कहलाया कि तुम अकेले शेरशाहसे न लड़ना. मैं भी आता हूं साथ चलना, दोनों मिल कर उसे हरायेंगे और मैं इस सहायताके बदलेमें गुजरात तुम्हें फतेह करादूंगा। रावजीने यह बात मानली और बादशाहको लिखा कि जैसलमेर होकर आओ वहां वाले हमारे सम्बन्धी हैं, आपका साथ देंगे। उधर ईश्वरदास

को लिखा कि रानीको लेकर जल्द आओ। हम तुम्हें कुछ जरूरी कामोंके लिये रावलजीके पास जैसलमेर भेजेंगी। वहांसे हुमायं बादशाहको सहायता देकर फिर दिल्लीके तख्त पर बिठा देंगी।

बारहटजीने इन बातोंमें अपना अधिक लाभ देखकर हाकिम और किलेदारोंसे सवारीका प्रबन्ध करा लिया और रूठीरानीको जोधपुर रवाना कर दिया। दूसरी रानियां यह सुनकर बहुत घबराईं कि लो विपद आगई रावजी उसे किला सौंप कर बादशाहसे लड़ने जायंगे, या तो बन्न अनबन और या अब बह मेल! नारी क्या है जादूकी पुड़िया है ६० कोस दूर बैठी भी चुप नहीं। वह मन्त्र मारा कि जिसका उताराही नहीं, बारहट ईश्वरदास भी अपनी ओर होकर उधर होगया।

एक बडारन (खवास) ने रानियोंकी यह बात सुनकर कहा कि ईश्वरदासका काका बारहट आसाजी तो यहां मौजूद है, उससे काम लो। झालीरानीने उसी खवासको आसाजीके पास भेजा और कहलाया कि तुम्हारा भतीजा बड़ा अन्याय करता है जो दूर बैठी हुई भटानीको यहां लेकर आता है और हमारे घरमें घोड़ा घालता(१) है। आसाने कहा कि वह कुपूत तो मेरे कहनेमें नहीं और जो कहो सो करूं। रानीने कहा कि भटानी यहां न आने पावे। आसाने कहा ऐसाही होगा, नहीं आवेगी। रानीने कहा, न कैसे आवेगी, वह तो चल पड़ी है, कल या परसोंही आ पहुंचती है। बारहटने कहा, मैं उसे राहमें ही रोक दूंगा। रानियोंने उसे बहुत कुछ धन दिया और वह रावजीसे यह बहाना करके कि अपने घर जाता हूं अजमेरको चल दिया। जब जोधपुर से १५ कोस पूर्व कोसाना गांवके पास पहुंचा तो उसे दूरसे निशान का हाथी दिखाई दिया और नक्कारेकी आवाज सुनाई दी। उसने जान लिया कि रूठी रानीकी सवारी आगई। सवारीका तांता

(१) घरमें घोड़ा घालनेका अर्थ झगड़ा उठाना है।

दूर तक लगा था, हाथीके पीछे ऊंटोंका नौबतखाना था, उसके पीछे घोड़ों पर नक्कारा बजता था। पीछे सजे हुए ऊंट और फिर चोलोंका झण्डा(१) हवामें उड़ता दिखाई दिया। झण्डेके पीछे रणबंका बरछेत राठोड़ोंका एक रिसाला था फिर एक कतार बन्दूकचियोंकी, उनके पीछे तीरन्दाज, फिर ढाल तलवारवाले राजपूत थे। आगे कुछ दूर मैदान खाली रखकर कोतल हाथी और घोड़े चलते थे। उनके पीछे नकीब चोबदार सोने चान्दीके असे लिये हुए प्रबन्ध करते चलते थे। बारहट ईश्वरदास भी पांचों हथियार लगाये एक चालाक घोड़े पर अकड़े बैठे थे। ज्योंही उसकी दृष्टि अपने चचा आसाजी पर पड़ी, घोड़ेसे उतरकर मुजरा किया और पूछा, आप यहां कहां? आसाजी बोले, बाईजीकी पेशवाईको आया हूं। दोनो वहीं खड़े होकर बातें करने लगे, सवारी बढ़ती चली गई।

फिर एक झुण्ड सजी सजाई और कसी कसाई स्त्रियोंका आया। उनमें कुछके पास तीरकमान और तलवारें भी थीं। उन्हींके झुरमुट में रानीका सुनहरी सुखपाल था। उस पर जरीका गहरा गुलाबी पर्दा पड़ा और जगह जगह गहरे और चमकीले रंगके नग जड़े थे जिन पर निगाह नहीं ठहरती थी। सुखपालके पीछे नंगी तलवारोंका पहरा था। फिर कई जनानी सवारियां पालकियों, पिनिसों और रथोंमें थीं। उनके पीछे राठोड़ोंका एक एक रिसाला और रिसालेके पीछे जुलूसके शेष कोतल घोड़े हाथी और ऊंट थे। सबके पीछे फर्राश खाना तोशाखाना, और मोदी आदि लावलशकरकी ऊंट गाड़ियां थीं।

आसाजीके साथी कहते थे कि देखें आसाजी कैसे इस धूमधड़क्केसे चलती हुई शाहाना सवारीको रोक देंगे, जिसके आगे कोई चूं नहीं कर सकता। इतनेमें रूठीरानी

(१) जोधपुरके झण्डेमें चीलोंकी तस्वीर होती है। यह राठोड़ोंका खास निशान है।

का सुखपाल आसाजीके बराबर पहुंचा। उसने बड़े अदबसे ड्यो-ढ़ीदारको आवाज देकर कहा, बाईजीसे अर्ज करो कि आसा बारहट मुजरा करता है और कुछ विनय भी किया चाहता है और साथही यह दोहा पढ़ा—

मान रखे तो पीवतज, पीव रखे तजमान।
दोय गयन्द न बन्धियि, एकण खम्भू ठान॥

अर्थात् मान रखती है तो पति छोड़ और पतिको रखना चाहती है तो मान छोड़, क्योंकि एकही थानमें दो हाथी नहीं बान्धे जाते।

दोहा सुनतेही रूठीरानी फिर सनक उठी, और उसका दिल उसके वशमें न रहा, उसी दम सवारी लौटानेकी आज्ञा दी। सब चकित रहगये कि यह क्या हुआ, ईश्वरदासने बहुत जोर मारा, हाथ जोड़े पर आसाजीके जादू भरे शब्दोंके सामने उसकी कुछ पेश न गई। रानीने किसीकी बात न सुनी कोसाना गांवमें डेरे करा दिये। आसा उसे और पक्का करनेको ड्योढ़ी पर पहुंचा और मुजरा करके कहा—बाईजी, धन्य हो, मान तुम्हाराही सच्चा है और सब कहनेकी बातें हैं।

रानी—बाबाजी, वह दोहा फिर पढ़ो, बड़ा अच्छा और सच्चा दोहा है। अपना मान मैं कभी न छोड़ूंगी।

आसा—(दोहा पढ़कर) बाईजी! राजाओंमें सच्चा मानी दुर्योधन हुआ उसी कुलमें आप हैं। रानियोंमें सच्चे मान गुमानवाली आपही हैं।

रानी—बाबाजी! दुर्योधन नामका तो एक ही राजा हुआ, पर अभागी उमाके नामकी तो कई रानियां हुई। उनमें एकके नामका यह दोहा प्रसिद्ध है—

हार दियो छल्दो कियो, मूक्यो मान मरम्म।
उमा पीव न चक्खियो, आडो लेख करम्म॥

अर्थात् हार दिया, छिपाया, मान छोड़ा, फिर भी उमाको

पतिका सुख न मिला, उसके भाग्यकी लकीर आड़ी पड़ गई।

आसा—बाईजी ! वह तो उमा सांखिली(१) थी और तुम उमा भट्टानी हो, दोनोंका घराना भी एक नहीं।

रानी—(रोकर) बाबाजी दोहेमें तो केवल उमा है सांखली और भट्टानीको कौन जाने।

आसा—क्यों नहीं जाने, यह दोहा अचलदास खेचीकी वार्त्ता का है, उमादे सांखेली उसकी रानी थी, उसे सब जानते हैं क्या तुम नहीं जानतीं ?

रानी—मेरे और तुम्हारे जाननेसे क्या होता है, दोहेमें तो जाति नहीं लिखी है, मेरे और तुम्हारे पीछे कौन जानेगा ?

आसा—तुम्हारे पीछे तक जीता रहा तो तुम्हारे नामको अमर कर दूंगा।

रानी—आप न आते तो न जाने क्या होता। आपके भतीजे की बात पर धोखा खाकर मैं अपनी मर्य्यादा छोड़ देती तो सौतें मुझ पर हंसतीं और कहतीं कि बस इतनाही पानी था।

इतनेमें अर्ज हुई कि ईश्वरदास हाजिर है, यह सुनकर आसा चला गया। ईश्वरने आकर कहा—बाईजी ! यह आपने क्या

---

(१) उमादे सांखिली गागरोनके खेची राजा अचलदासकी रानी थी। उसकी सौत सोढ़ी रानी राजाके ऐसी मुंह लगी थी कि राजा उसके भयसे सांखेलीके पास नहीं जाता था। जब इस प्रकार बहुत वर्ष बीत गये तो एक दिन सोढ़ी रानीने सांखेलीके पास एक बहुमूल्य हार देखकर एक रातके लिये मांगा। उसने हार इस प्रतिज्ञा पर दिया कि वह राजाको एक रात उसके पास आने दे। सोढ़ी रानीने यह स्वीकार किया पर राजाको समझा दिया कि जाना पर चुपचाप रात बिताकर चले आना। राजाने वैसाही किया। सवेरे सांखेली रानीने दुःखके साथ ऊपर लिखा दोहा पढ़ा। राजस्थानके लोग इसे निराशाके समय पढ़ा करते हैं।

किया, चलती सवारी राहमें ठहरालो? रावजी आपकी बाट देख रहे हैं। कुमार रामसिंह, रायमल, उदयसिंह और चन्द्रसेन आदि स्वागतको तय्यार हैं। नगर भरमें आनन्द फैल रहा है कि रूठी रानी आती हैं और रावजी उन्हें किला सौंपकर लड़ने जाते हैं।

रानी—तुम रावजीको लिख भेजो कि मैं तो यहांही रहूंगी यहांका जो प्रबन्ध करना हो वह मेरे जिम्मे करें और हर्षपूर्वक लड़नेको जावें। राजपूतोंको शत्रुओंसे लड़नेमें देर न करना चाहिये।

ईश्वर—अंधेर करती हो, यहां रहकर क्या करोगी? रावजी ने अपने पराये सबसे शत्रुता कर रखी है, घर फूट रहा है। वीरम-देव मेड़तिया और मारवाड़के दूसरे भूमिये और जागीरदार जिन-की भूमि रावजीने छीन ली है शेरशाहके पास पुकारने गये हैं, फिर एक ओरसे शेरशाह और दूसरी ओरसे हुमायूंके आनेकी खबरें उड़ रही हैं आप जोधपुर चलकर किलेका प्रबन्ध कीजिये।

रानी—बादशाह आते हैं तो आने दो, मुझे उनका क्या डर पड़ा है, मैंने तुमसे जो बात अजमेरमें कही थी वही यहां कहती हूं। रावजी यदि कोई काम मेरे अधिकारमें कर देंगे और अपने पासकी सेनामेंसे आधी भी यहां भेज देंगी तो मैं यहां बैठी बैठी भी जोधपुरकी रक्षा कर लूंगी। रावजी जहां चाहें जायं, मैं अब जोध-पुर नहीं जाऊंगी। हां यदि रावजी आज्ञा दें तो रामसरमें जा रहूं।

ईश्वरदासका मनोरथ सिद्ध नहीं हुआ। उसने जोधपुर जाकर रावजीसे कहा कि मैंने तो बाईजीकोप्रसन्न कर लिया था, आसाजी ने कढ़ी बिगाड़ दी, किये कराये पर एक दम पानी फेर दिया, आपने उसे भेजा क्यों? रानी उमादेको आप जानते हैं। आसा जीने मानका शब्द उन्हें फिर याद दिला दिया और वह मचल गईं और कोसानेमें डेरे कर दिये। मैंने बहुत समझाया पर उन्होंने एक न सुनी। किसीने पागलसे पूछा—क्यों गांव जलाया? उसने

कहा खूब याद दिलाया, अब जलाता हूं।

रावजी—फिर अब क्या करना चाहिये, किसे भेजूं?

ईश्वर—मुझे तो ऐसा कोई नहीं दिखता जो जाकर उन्हें मना लावे, और वह भी आसाजीके होते।

रावजी—आसाजी तो मुझसे घर जानेको छुट्टी लेकर गये थे?

ईश्वर—बस इसीमें कुछ चाल हुई।

रावजी—चाल कैसी?

ईश्वर—विशेष कुछ नहीं (कहते कहते रुक गया क्योंकि आप भी रिशवत हजम किये बैठा था)

रावजी—तब क्या करना चाहिये।

ईश्वर—अभी तो आसाजीको हुक्म होना चाहिये कि वहांसे चले जायं, फिर मैं बाईजीको लेआऊंगा।

इतनेमें हुमायूं सिन्धसे मारवाड़में आया और आगरेसे शेरशाहके वकील यह पैगाम लेकर पहुंचे कि हुमायूंको पकड़ना, जाने न देना। इसके बदलेमें गुजरात फतेह करके तुम्हें दिया जायगा। यह सुन रावजी दुविधामें पड़ गये। यह खबर हुमायूंने भी सुनी, वह ऊपर ऊपर लौट गया। उसके साथियोंने मारवाड़में गोबध किया था, रावजीने इस अपराधका दण्ड देने और शेरशाहकी दृष्टिमें भला बननेके लिये कुछ फौज हुमायूंके पीछे भेजी, पर वह बचकर निकल गया।

राजपूतोंकी वीरता।

शेरशाह हुमायूंके बचकर निकल जानेकी बात सुनकर रावजीसे बिगड़ा उसने मारवाड़पर चढ़ाई कर दी। रावजी अजमेर जानेको तो पहलेसे ही तैयार थे, अब मेड़तेका रास्ता छोड़कर जैतारनके रास्ते चले। जोधपुरके हाकिमने रावजीकी आज्ञासे

कोसानेमें जाकर रूठी रानीकी सवारीका अधिकार मेड़तेके हाकिमसे लेलिया। मेड़तेके हाकिम और आसाजी दोनोंने रूठीरानीकी सरकारसे खिलअत पायी, हाकिम मेड़तेको गया और आसाजी जेसलमेरको। आसाजोसे रावजीने जोधपुरके हाकिम द्वारा कहला दिया था कि अब तुम हमारे राज्यमें न रहो।

जब रावजी अजमेर पहुंचे तो शेरशाहने सुना कि उनके पास ८० हजार सेना है, वह सन्नाटेमें आगया। वीरमजी (१) मेड़तियेने कहा कि आप चलें तो सही, मैं रावजीको जरा देरमें भगा सकता हूं। शेरको इसका विश्वास न हुआ, वह फूंक फूंककर पांव रखता हुआ चला जब अजमेर बहुत पास रह गया तो उसने वीरमजीसे कहा कि अब अपनी चतुराई दिखाइये। वीरमने राव मालदेवके सरदारोंके नाम फारसीमें फर्मान लिखाया, "हम तुम्हारे बुलानेसे आगये हैं अब तुम अपनी प्रतिज्ञाके अनुसार रावजीको पकड़कर लेआओ तुम्हारे खर्चके लिये फीरोजियां(२) भेजी जाती हैं।" फिर एक एक फर्मान ढालकी गद्दीमें रखकर सी दिया। जिस ढालमें जिस सरदारके नामका फर्मान था वह उसीके पास बेचनेको भेजी और बेचनेवालेसे कह दिया कि वह जिस दाममें ले देआना। फिर कई लाख फीरोजियां शेरशाही खजानेसे लेकर कुछ तो आप रखलीं और बाकी अपने आदमियोंके हाथ रावजीके उर्दूबाजारमें भेजकर सस्ते दामपर बिकवा दीं। इसी प्रकार ढालें भी रावजीके सरदारोंने लड़ाईकी जरूरतसे महंगी सस्ती सब खरीद लीं।

येह काररवाई करके रातको वीरमजी रावजीके पास गया और कहने लगा कि आपने मेड़ता मुझसे छीन लिया और बीकानेरके

---

(१) यह मेड़तीका राव था, राव मालदेवने इसे मेड़तेसे निकाल दिया था। चित्तौड़का प्रसिद्ध वीर जयमल राठौड़ इसीका पुत्र था।

(२) फीरोजशाही सिक्का जो उस समय भी चलता था।

राव जेत्सीको मारडाला, इससे यदि हम बादशाहसे मिलें तो मिल सकते हैं, पर आपके और सरदार उससे क्यों मिल गये हैं, उन्होंने रिश्वतमें खूब फीरोजियां ली हैं।

रावजी—बाबाजी(१) मुझे तो कुछ खबर नहीं, इसका कुछ सबूत है?

बीरम—अपने सरदारोंकी ढालें देखिये उनकी गद्दियोंमें बादशाही फर्मान हैं और लाखों फीरोजियां आई हैं क्या बाजारमें न बिकीं होंगी?

बीरम यह कहकर चल दिया पर रावजी बड़े फेरमें पड़े। आदमी भेजकर फीरोजियोंका हाल पूछा तो सब सर्राफों के पास निकलीं। उनसे पूछा तो कहा कि अपनेही आदमी बेच गये हैं। इससे रावजीको अपने सरदारों पर पूरा सन्देह होगया। दूसरे दिन जब सब सरदार मुजरेको आये तो रावजीने उनके पास नई नई ढालें देखकर पूछा, यह कहांसे आईं? उत्तर मिला कि व्यापारियोंसे खरीदी गई हैं।

रावजीने देखनेके बहानेसे सब ढालें रखलीं। दरबार उठ जाने पर उनकी गद्दियोंको चिरवाकर देखा तो वही फर्मान मिले जिन की बात बीरमने कही थी। मुन्शीको बुलाकर पढ़वाया तो वही लेख निकला। रावजीको विश्वास होगया कि सब सरदार रिश्वत लेकर बादशाहसे मिल गये हैं, मेरे साथ दगा करेंगे। रामसे मिल जानेका सन्देह तो पहले ही था, अब यकीन होगया कि सरदारों की नीयत खराब है। उसीदम कूचकी आज्ञा दी, सब चकित रहगये। सरदारोंने विनय की, कि हम बादशाहसे कभी नहीं मिले, हमारे साथ जालसाजी हुई है, पर रावजीको विश्वास न हुआ।

बादशाहने बीरमकी काररवाईसे साहस पाकर रावजीका पीछा

(१) बीरमजी सम्बन्धमें रावजीके दादा होतेथे और जयमल चचा।

किया। जब रावजी बावरा जिला जैतारनके पास सुमेल नदीसे उतरे, तो उनके सूर्मा सरदार जेता और कूंपाने विनय की, कि यहां तक जो भूमि आप पीछे छोड़ आये हैं वह आपकी जीती हुई थी, अब आगे हमारे बड़ों (१) की जीती हुई है। हम ऐसे कुपूत नहीं हैं जो अपनी भूमिको यों ही छोड़कर चले जायं। आप जाते हैं, खुशीसे जायं, हम तो शेरशाहसे यहीं जम कर लड़ेंगे वह भी तो देखे कि राजपूत भूमिके लिये कैसे प्राण देते हैं।

रावजीने कहा यहां लड़ना व्यर्थ है, जोधपुर चलकर लड़ेंगे। पर जेता कूंपाने न माना वह दस हजार बीर राठौड़ोंको लेकर पलट कर बादशाहकी सेना पर पिलच पड़े, ऐसे लड़े कि बादशाहको अपने मारे जानेका भय होगया। पर उसकी सेना चालीस पचास हजार थी और यह कुल दस हजार। कहां तक लड़ते अन्तको मारे गये, अपनी बीरताका सिक्का बादशाहके दिला पर जमा गये। शेरशाहने खुदा खुदा करके विजय पाई। शुक्र करते हुए कहा, बड़ी खैर हुई, नहीं तो मुट्ठी भर बाजरीके लिये हिन्दुस्तानकी सलतनतही खोई थी।

दूसरे दिन इस समाचारको सुनकर रावजीने सिवानेकी ओर बाग मोड़ी। जोधपुरके किलेदार को लिखा कि किलेका बन्दोबस्त रखो और रानियोंको हमारे पास भेज दो, यही बात रूठीरानीसे कहला दो। किलेदारने आज्ञा पातेही सब रानियोंको सिवाने भेज दिया जो जोधपुरसे ३० कोस पश्चिमी मरुस्थलमें है और स्वयं किला सजाकर लड़ने मरनेको तैयार हो बैठा। जो राठौड़ रावजीके अविश्वाससे अप्रसन्न होकर फिर आये और जो जेता कूंपाके मारे जाने पर बच रहे वह सब मिल कर कोसानेमें रूठीरानीके पास एकत्र होगये।

शेरशाह स्वयं तो नहीं आया पर उसने पांच हजार सवारोंके

(१) जेता और कूंपाभी बीरमकी भांति रावजीके खान्दानके थे।

साथ खवासखां को जोधपुर जीतनेके लिये भेजा। उसने आकर किला घेर लिया। किलेदार उससे लड़ा पर जब पीनेका पानी समाप्त हो चुका तो किलेके द्वार खोलकर और एक घमसान युद्ध करके मर गया। किले पर खवासखांका अधिकार होगया। तब उसने कुछ सेना बीकानेरमें राव जैतसीके पुत्र कल्याणमलको दखल देनेके लिये भेजी और कुछ राव बीरमदेवके साथ मेड़तेमें उसका अधिकार करानेके लिये। उस सेनाने लौटकर खवासखांको खबर दी कि कोसानेमें राठौड़ जमा होते हैं। खवासखांने कोसाने जाकर रूठीरानीसे कहलाया कि या तो लड़ो या जगह खाली करो। रानीने कहलाया कि मैं लड़नेको तैयार हूं, पर यदि जीत गई तो तेरी और तेरे बादशाहको बनी बनाई बात दो कौड़ी की हो जायगी, और यदि तू जीता तो स्त्रीसे जीतनेमें तेरी कुछ बहादुरी नहीं।

खवासखांने अपने सरदारोंसे सलाह की। उन्होंने कहा कि अभी तो थोड़े से राजपूतोंने बादशाहसे लड़कर आफत मचा दी थी, उनके साथ राजा भी न था, जो वह होता तो न जाने क्या कर डालते। यहां रानी मौजूद है जो मर्दानी जान पड़ती है। मर्दानी न भी हो तो राजपूत अपनी रानीकी इज्जतके लिये खूब जी तोड़ कर लड़ेंगे। खवासखांने कहा कि यह ठीक है, पर अगर यहांसे बिना लड़े चला जाऊंगा तो लोग कहेंगे कि मर्द होकर स्त्रीके सामनेसे भाग गया। सरदारोंने कहा कि औरतसे न लड़नेमें उतनी हतक नहीं जितनी उससे हार जानेमें है। अन्तमें निश्चय हुआ कि बादशाहसे सलाह ली जाय।

बादशाह उस समय अजमेरमें था, वह राना उदयसिंह पर चढ़ाई करनेकी चिन्ता कर रहा था। खवासखांकी अरजी पहुंचने पर उसने उत्तर दिया कि अब उस भिड़ोंके छत्तेको न छेड़ो, अगली फतेहको गनीमत समझो। हां अगर वह खुद लड़ने आवें तो न हटो। खवासखांने यह उत्तर पाकर लड़ाईका इरादा छोड़ दिया।

और रूठीरानीसे कहलाया कि जहां मेरा लश्कर पड़ा है हुक्म हो तो वहां एक गांव बसाकर चला जाऊं जिससे मेरा भी कुछ निशान आपके मुल्कमें रह जाय।

रानीने कहा—नाम नेकीसे रहता है. इस समय तू जोधपुरका हाकिम है, यदि प्रजाके साथ अच्छा वर्ताव करेगा तो लोग आप तेरी यादगार बनावेंगे। उसने कहा, खुदा आपकी जुबान मुबारक करे, मैं जो अपने हाथसे कर जाऊं वही अच्छा है। रानीने अपने सरदारोंसे सलाह की। उन्होंने कहा कि क्या हानि है, अपने देशमें एक गांव बढ़ेगा। रानीने उसे गांव बसानेकी आज्ञा देदी और खवासखां खवासपुरा(१) बसाकर चल दिया। इस तरह रूठीरानीकी बात रहगई। यह घटना फाल्गुण संवत् १६०० की है।

रावजीका देहान्त।

संवत् १६०२ में शेरशाह मर गया। यह खबर मारवाड़में फैलतेही रावजीके राजपूत इधर उधरसे खवासखां पर हमला करने लगे। खवासखां उनसे लड़ता भिड़ता जोधपुरके बाजारमें मारा गया। रूठीरानीके उपदेशसे उसने जोधपुरवालोंकेसाथ अच्छा वर्ताव किया था इससे जोधपुरवालोंने वहां उसकी कबर बनाई और लाश को खवासपुरमें लेगये, वहां भी एक मकबरा बनाया, गांव बसा बाग लगा दोनों जगह उसकी कबरकी मानता हुई। हिन्दू मुसलमान वहां चढ़ावा चढ़ाते हैं, यह उसकी नेकीका फल है जो बड़े बड़े बादशाहोंको भी प्राप्त नहीं होता। रावजी भी सिवानेकी तरफसे रास्तेके अफगानी थानोंको उठाते हुए लड़ते भिड़ते जोधपुर

(१) यह गांव परगने मेड़तामें कोसानासे जो अब परगना बेलाड़में है २-३ कोस पर है।

पहुंच गये और जोधपुरमें फिरसे राठौड़ोंका राज्य होगया। साथ ही कुछ घरेलू झगड़े भी उठे, जिनकी नींव रावजीने झालीरानी स्वरूपदेके प्रेमसे स्वयं डाली। रावजीका बड़ा बेटा राम रानी लाछलदे कछवाहीसे उत्पन्न हुआ था और रूठीरानीके पास अधिक रहा करता था। उससे छोटा रायमल झाली हीरांदेसे उत्पन्न हुआ था। उदयसिंह और चन्द्रसेन रानी स्वरूपदेसे हुए थे। हीरांदे और स्वरूपदे चचेरी बहने थीं वह अपने पुत्रोंके लाभके लिये आपस में साजिश करके रावजीको रामकी ओरसे बहकाती रहती थीं। राम भी रावजीको खिंचा देखकर खिन्नसा रहता था। रावजीके साथी भी रावजीके शासनकी कमजोरी देखकर रामको रावजीके विरुद्ध भड़काते रहते थे। मारवाड़के अमीर घरोंमें पुरुषोंके लिये दाढ़ी छटाने और स्त्रियोंके लिये हाथी दांतका चूड़ा पहननेके दो अवसर बड़ी खुशीके होते हैं। इन अवसरों पर खूब आनन्दोत्सव किये जाते हैं राम संवत् १६०४ में १६ वर्षका होगया, उसके थोड़ी थोड़ी दाढ़ी मूछें भी निकलआईं। दाढ़ी जबतक ठोड़ीके ऊपर बीचमेंसे नहीं छटाई जाती तबतक हिन्दू मुसलमानोंमें कुछ भेद नहीं समझा जाता। मानो यह पहचान हिन्दू मुसलमानकी दाढ़ीकी है। लाछलदेने अपने पुत्र रामकी दाढ़ी छटानेका सामान करके रावजीसे उत्सवके लिये आज्ञा मागी। उन्होंने आज्ञा दी। जोधपुरमें जल कम है, इससे राम उत्सव करनेके लिये मण्डोर (१) के हरे भरे बागोंमें चला गया और उत्सवके बहाने वहीं पर अपने मित्रों और विश्वासी लोगोंको एकत्र करके बोला कि रावजी बूढ़े होगये हैं, उन्होंने बहुतसे शत्रु उत्पन्न कर लिये हैं, देशमें झगड़ा फैला रखा है आज यहांसे चलतेही उन्हें पकड़ लो और कैद करदो जिससे सबको सुख होजाय। यहां यह सलाह होती

(१) मण्डोर मारवाड़की पुरनी राजधानी है जोधपुरसे तीन कोस उत्तर एकपहाड़ीके नीचे बसा है।

ही रही वहां रावजीको भी इसकी खबर लग गई। उन्होंने झटपट कछवाही रानी लाछदे की धोढ़ी पर पालकी भेजकर कहलाया कि अभी किलेसे नीचे आजाओ। रानीने पूछा, मेरा दोष? उत्तर मिला कि तेरा बेटा तुझसे कहेगा। रानीको उसीदम किला छोड़ना पड़ा! सन्ध्याको रामभी नशेमें झूमता आया किलेमें जाने लगा तो किलेदारने कहा भीतर जानेका हुक्म नहीं है। रामके कहनेसे किलेदारने रावजीसे जाकर कहा। उन्होंने उत्तर दिया कि राम कुपुत्र है किलेमें रहनेके योग्य नहीं। वह गोन्दोज चला जाय वहीं उसके लिये सब प्रवन्ध होजायगा। राम अपनी मा सहित गोन्दोज चला गया, इस तरह यह काम झाली रानियोंकी इच्छानुसार होगया। तब वह रूठी-रानीको हटानेकी चेष्टा करनेलगीं। कहती थीं कि यह सिल अभी छाती परसे नहीं सरकी, पहले ६० कोस पर थी अब १५ कोसपर है। झाली रानियोंने स्वयं भी रावजीसे कहा और दूसरोंसे भी कहलाया कि रूठीरानीके कारणही राम ऐसा उद्धत और अशिष्ट होगया है। रावजीने रूठीरानीको भी गोन्दोज भेज दिया। रूठी-रानीने कुछ तो राम पर स्नेह रखनेसे कुछ रावजीके आदरके लिये और कुछ अपने स्वाधीन स्वभावके अनुकूल देखकर यह हुक्म मान लिया और गोन्दोज चली गई, उसकी सौतोंके घर उस दिन घीके दिये जले।

गोन्दोजमें अपना निर्वाह न देखकर राम उदयपुर चला गया। क्योंकि राना उदयसिंहकी पुत्रीसे उसका विवाह हुआ था। रानाने उसका बहुत आदर किया और केलोह ग्राममें उसके रहनेको स्थान दिया जो मारवाड़से निकट पड़ता है। राम अपनी सगी माता और सौतेली मा रूठीरानीको भी वहीं लेगया। झाली रानियोंकी आंखोंका कांटा यों निकल गया, रावजीभी बाहर भीतर के शत्रुओंसे बेखटके होकर फिर देश विजय करनेमें लग गये और बहुतसे अपने खोये हुए इलाके फिर जीत लिये, कई नये इलाके

भी फतेह किये, पर जल्दही विजयकी धारा रुक गई। अकबरके बादशाह होने और जोर पकड़नेसे रावजीको अपनीही पगड़ी सम्हालना कठिन होगया, धीरेधीरे कितनेही परगने मुगलोंके अधिकारमें चले गये। इसी दशामें कार्त्तिक सुदी द्वादशी संवत् १६१८ को राव मालदेवका देहान्त होगया।

रूठीरानीका सती होना।

रानियां सती होनेकी तय्यारी करने लगीं। झाला रानीको उसके बेटे चन्द्रसेनने सती होनेसे रोक लिया और कहा कि दो चार दिनमें सब सरदार बाहरसे आजायंगे उनसे मेरी सहायता करनेका वचन लेकर सती होना। झालीरानीने चन्द्रसेनको उदयसिंहसे छोटा होने पर रावजीसे कह सुनकर युवराज बना दिया था। झालीरानी हीराटेने भी उससे चन्द्रसेनकी सिफारिश की, इस लिये स्वरूपदे ठहर गई, उसी समय सती न हुई। दूसरी रानियां, पातरें और खवासें रावजीके साथ सती होगईं जो गिनतीमें २१ थीं।

रावजीके मरनेकी खबर बहुत जल्द सारे देशमें फैल गई, उनके बड़े बड़े सरदार अपने अपने सिर मुंड़ाकर जोधपुरमें आने लगे। झाली रानी स्वरूपदेने रावजीके मरनेके पांचवें दिन चन्द्रसेनको सरदारोंका वचन तो दिला दिया पर इस झमेलेमें देर होजानेसे उसने चन्द्रसेनसे कहा कि तूने अपने राज्यके लिये मुझे रावजीके साथ जानेसे रोक लिया इसलिये इस राज्यसे तू कुछ लाभ न उठावेगा और न तेरी सन्तान। यह कहकर उसने चिता बनवाई और रावजीकी पगड़ीके साथ सती होगई।

दूसरी पगड़ी(१) कार्त्तिक सुदी पूर्णिमाको केलोहमें पहुंची। उसे

---

(१) जब कोई राजा मर जाता था तो नाजिर उसकी पगड़ी लेकर जनानेमें जाता था। सती होनेवाली रानी उस पगड़ीको

देख रूठीरानीने आपसे आप मान छोड़ दिया, उसका सारा बल निकल गया। कहने लगी—अब किससे रूठूंगी, जिससे रूठी थी वही अब नहीं रहा तो जीकर भी क्या करूंगी। भगवानने मेरा मान सुधार दिया। जल्द चिता तय्यार करो मैं भी रावजी का साथ न छोड़ूंगी। उधर लाछलदे भी सती होनेकी तय्यारी करने लगी पर उसका पुत्र राम राज्य लेनेके लिये माताओंके सती होने तक न ठहरा, उदयपुर चल दिया। माताने उसे श्राप दिया कि राम! तेरे लिये हमें जोधपुर छोड़कर यहां दिन काटने पड़े और तू हमें छोड़कर जाता है इससे तू और तेरी सन्तान कभी मारवाड़का राज्य न करेगी सदा बाहर रहेगी।

चिता तय्यार होते होते यह खबर दूर तक फैल गई कि रूठीरानी भी पतिके पीछे सती होती है। चारचार पांचपांच कोससे लोग सतीके दर्शन करने दौड़े। सब हाथ जोड़कर कहते थे—सती माता! तू धन्य है। सच्ची सती इस कलियुगमें तूही है। धन्य है तू और तेरे मातापिता। यह मेवाड़ देश भी धन्य है जिसे तू सती होकर पवित्र करती है। लाछलदे! तू भी धन्य है!

चिता तय्यार होगई, बाजे बजने लगे। दोनो सतियां घोड़ों पर चढ़कर बाजारोंसे निकलीं, रुपये और गहने लुटाती जाती थीं। चिता पर पहुंचकर दोनो आमने सामने बैठीं और पतिकी पगड़ी बीचमें रखली। पर लांपा अर्थात् आग देनेवाला कोई नहीं था, सब लोग चुप खड़े देख रहे थे। रूठीरानीका चेहरा चांदसा चमक रहा था, पर अचानक रामकी कुपात्रता याद आकर लाल होगया। उसके दग्ध हृदयसे फूलसी कोमल जिह्वाकी भुलसाते हुए यह वचन निकले—"मैं तो अपने पतिसे रूठकर आई सो आई पर दूसरीकोई

लेलेती थी दूसरी रानियां भी उसीके साथ सती होजाती थीं। जो रानी कहीं दूर होती थी एक पगड़ी उसके पास भी भेज दीजाती थी।

खोजाई इस प्रकार सौतके पुत्रके साथ न आवे।" लाछलदे उसका यह नृसिंह रूप देखकर डरी कि कहीं उसके पुत्रको कोई कड़ा शाप न दे दे। उसने रूठीरानीको और बोलने न दिया और कहने लगी—बाईजी! उस कुपूतने सगी माको ओर भी ध्यान न दिया, वह जरा ठहर जाता तो हमें पतिके पास जानेमें इतना विलम्ब न होता, आग देदेता तब चला जाता।

पतिका प्यारा नाम सुनकर उमादेको जोश आगया पतिकी प्रीति उस पर छागई। उस समय उसकी दृष्टि जिस पर पड़ती थी वही मत्त होजाता था। किसीने क्या अच्छा कहा है—

नैन छके बैना छके, छके अधर मुसक्याय।
छकी दृष्टि जापर पड़े, रोम रोम छक जाय॥

फिर रूठीरानीने जरा सम्हलकर कहा—देखो, यहां कोई राठौड़ तो नहीं है? जेत मालोत नामका एक कंगाल राठौड़ मिला। वह डरता डरता आया और हाथ जोड़कर बोला—सती माता! मुझपर दया करो। मैं तो भूखा मरता मारवाड़ छोड़ कर यहां मेवाड़में पेट पालता हूं। उमादेने कहा—ठाकरां डरो मत, स्नान करके चितामें आग देदो, तुम राठौड़ हो इस लिये तुम्हें बुलाया है। उसने कहा—सती माता! आग तो मैं दूंगा पर साथलवाड़ा(१) डालकर बारह दिन तक कहां बैठूंगा मेरा तो घर भी इतना बड़ा नहीं कि जोधपुरकी रानीको दाह करके उसमें शोककी जाजम बिठाकर बैठूंगा। उमादेने यह सुनकर मुंशीको इशारा किया, उसने उसी दम रानाजीके नाम सतियोंकी ओरसे चिट्ठी लिखी कि राम हमें सती किये बिनाही चला गया। आप यह केलोह गांव उससे छीनकर जेत मालोत राठौड़को देदें। इस तरह सतीने दस हजारकी पैदावारका गांव उस कंगाल राठौड़को दिला दिया।

(१) शोकके लिये जाजम बिछाकर बैठना।

जैत मालौतने चिट्ठी लेकर कुछ देर न की भद्र होकर स्नान किया और चितामें आग देदी। इस प्रकार विवाह होनेके २७ वर्ष बाद उमादेका रूठना और मान उसके साथही समाप्त हुआ, चारों ओरसे धन्य धन्य की ध्वनि होने लगी।

उमाके सती होनेकी खबर जब जोधपुर पहुंची तो सब उसे सराह कर कहने लगे कि भाटी वंश धन्य है जिसमें ऐसी राजकुमारियां उत्पन्न होती हैं। पतिसे रूठने पर भी जिनके पातिव्रतमें कोई फरक नहीं पड़ता। रावजीको मरे बारह दिन होने पर जैत मालौतके लिये जोधपुरसे पगड़ी आई उसने क्रिया कर्म समाप्त करके पगड़ी बान्धी, फिर उदयपुर जाकर वह चिट्ठी राना उदयसिंहको दी। उन्होंने चिट्ठी पढ़कर सिर पर रखी और केलोह का पट्टा उसके नाम लिख दिया। उसने लौटकर गांव पर अपना अधिकार कर लिया और जहां रूठीरानी सती हुई थी वहां एक पक्की छतरी बनवा दी जिसका चिन्ह अब तक बना हुआ है।

रूठीरानीकी कृपासे जिस प्रकार जैत मालौतको केलोह गांव मिला उसी प्रकार उसका शाप खाली न गया, रामको जोधपुरका राज्य न मिला। उदयसिंह और अकबरकी चेष्टा भी उसे राज्य दिलानेमें निष्फल हुई और वह बिना राज्य पायेही दुःखित हो कर मरा। उसके पोते केशवदासको जो अकबर और जहांगीर के इतिहासमें केशव मारूके नाम से प्रसिद्ध है मालवेमें एक छोटी सी जागीर अमझेरा मिली थी जो सन् १८५७ ई० के गदरमें जब्त होगई।

झाली रानी स्वरूपदेका शाप भी खाली न गया। चन्द्रसेन उस समय तो जोधपुरका राव होगया था पीछे अकबरने राव मालदेव का मरना सुन कर मारवाड़ पर फौजें भेजीं। राम, रायमल और उदयसिंह बादशाहकी सेनासे जा मिले। फल यह हुआ कि चन्द्रसेनने संवत १६२२ में जोधपुर खाली कर दिया जिसे अकबरने १८ वर्ष अपने अधिकारमें रखकर संवत्

१६४०में उदयसिंहके हवालेकिया। उसके वंशके अबतक जोधपुरका राज्यकरते हैं। चन्द्रसेनके पोते कर्मसेनको जहांगीरने अजमेर जिले में भिनाय का परगना दिया था, उसकी औलाद वहां है। इस प्रकार रूठीरानीकी कहानी पूरी हुई। वह नहीं है उसका नाम आज साढ़े तीन सौ साल बीत जाने पर भी बना हुआ है।

कवीश्वरोंने सती उमादेकी प्रशंसामें जो कविता लिखी है और गीत बनाये हैं वह ऐसे प्रभावशाली हैं कि उनके पढ़नेसे अब भी हृदय उमड़ आता है। इस समय सती होनेकी रीति नहीं है तोभी उस कविताको पढ़कर उस समयका चित्र आंखोंके सामने खिंच जाता है। आसाजी बारहट जिसने एक दोहा पढ़कर उमा को सदाके लिये पतिके पास जानेसे रोक दिया था उस समय कोटरा गांवमें बावा और भारेली के पास था। जब उसने रूठी-रानीके सती होनेकी बात सुनी तो कहा कि धन्य उमा! धन्य, आज तेरा मान सच्चा हुआ। उसने उसी समय १४ छप्पय बनाये और जगह जगह लिखकर प्रसिद्ध कर दिये क्योंकि उसने उमाके नाम और मानको अमर कर देनेकी प्रतिज्ञा की थी। वह छप्पय इस प्रकार हैं—

छप्पय।

गिरां सिरे गोरहर(१)—चन्दजस(२) नामो चाड़ण।
मेदपाट चीतोड़—भली जोधाण भवाड़ण।
नव(३) सहसो छत्र पड़े—बड़म(४) सागर लीलावर(५)।
आई कालाखरी(६)—मुवो राजेद मण्डोवर(७)।
सांभले(८) बात उमा सती—जादव आंगमियो(९) जलण।
मोलियो(१०) गहे राव मालरो—बांध कण्ठ ऊठी बलण॥

(१) पहाड़का नाम जिस पर जैसलमेरका किला है (२) अमर नाम करना (३) नौहजार गांवोंवाला (४) बड़प्पन (५) महावीर या महादानी (६) मृत्यु की पत्नी (७) मण्डोर (८) सुनकर (९) अङ्गी-कार किया (१०) चौरा जो राजाओंके मरनेकी खबर देनेके लिये रनवासमें रानियोंके पास भेजा जाता है।

अर्थ—पहाड़ोंमें सिरे (उत्तम) गोरहर है जो यशको अमर करनेवालाहै और मेवाड़ चित्तौड़ तथा जोधपुरको खूब भरमानेवाला है। नौ हजार गांवोंका छत्र बड़प्पनका समुद्र अच्छो लीलावाला, काल पवी आई कि, मण्डोरका राजराजेन्द्र मर गया। यह बात सुनकर जादव जातिकी सती उमाने जलना अंगीकार किया और राव मालदेवका चीरा लेकर गलेसे बांध लिया और जलनेको उठी।

रोपे काठ सुगन्ध—अगर चन्दण मलियागर।
परमल धूप कपूर—घिरत सींचे वैसन्नर(१)।
मिले कोड़ तेंतीस—सूर उचिस्रव साहे(२)।
करन बात अखियात—माल राजा पड़ गाहे(३)।
शशिबिंब जेम ऊमां सती—कमल(४) बसे सोलह कला।
गंगेव राव रावल करन—आज करे विहूं(५) ऊजला।

अर्थ—सुगन्धित काष्ठ अगर चन्दन मलयागिरिको रोपकर, धूप कपूरकी सुगन्धके साथ आगमें घी सीचा। ३३ करोड़ देवताओंसे मिलकर सूर्य्यने उच्चैःश्रवा नामक अपने घोड़ेको रोका राजा मालदेवके मरनेकी बात विख्यात करनेको। चन्द्रबिंब जैसी उमा सती जिसके मस्तकमें १६ कला बसती है गंगाके बेटे (मालदेव) और रावल करण (अपने पिता) दोनोंको उज्ज्वल करती है। २

जिकण(६) लाज हम्मीर—मुवो जूझे रिणथम्भर(७)।
जिकण लाज पातल्ल—मुवो पावागढ़ ऊपर।
जिकण लाज चूँडरज—मुवो नागोर तणे सिर।
कान्हड़ दे जालोर—अने दूदो जेसलगिर।
बड़घरां लाज राखण बड़ी—करन सिधू(८) खत्रवट(९)करे।
सौ लाज काज ऊमां सती—मालराज कारण मरे।

अर्थ—जिस लाजसे हम्मीर चौहान लड़कर रणथम्भोर पर मरा,

(१) अग्नि (२) रोका (३) मरा (४) मस्तक (५) दोनो
(६) जिस (७) लड़कर (८) बेटी (९) क्षत्रियपन।

जिस लाजसे पातल (प्रताप) पावागढ़ पर काम आया, जिस लाजसे चूंडा (राठौड़) नागौर पर मरा, कान्हड़देव (चौहान) जालोर पर और दूदा भाटी जैसलमेर पर मरा, बड़े घरोंकी बड़ी लाज रखनेके लिये करन (लवनकरण) की बेटी साहस करती है. उसी लाजके काज उमा सती मालराज (मालदेव)के साथ मरती है।

मरणो भय बीकम्म—खत्री तज वायस खद्दो।
मरणे भय रावणह—जीवरव किरणां बद्दो।
मरणे भय जल पेस–माण दुर्योधन मुक्के१।
मरणे भय पण्डवां—कोट हतणांपुर चुक्के।
बिकराल झाल हुय वय बसण२—वलेमाल३ वैकुण्ठ बरण।
सामरै४ काम ऊमा सती—मेडिचो५ रचियो मरण।

अर्थ—मरनेके डरसे बीकमने क्षत्रियपना छोड़कर कव्वा खाया था, मरनेके डरसे रावणने अपने प्राणोंको सूर्य्यकी किरणोंसे बांधा था, मरनेके डरसे दुर्योधनने मान छोड़ दिया था, मरनेके डरसे पांडव हस्तिनापुरका गढ़ छोड़ गये थे परन्तु विकराल ज्वालामें प्रवेश करके वैकुण्ठमें मालदेवको फिर बरनेके लिये जैसलमेरवाली उमा सतीने स्वामीके वास्ते मरना रचा।

मन्दोदर मेलियोराण६—है कल्लो७ रावण।
कुन्ती पांडु नरिंद रह्यो—बोलाय८ विचक्षण।
कान्ह मरण गोपियां—करग९ थभो नह दीधो।
कौसल्या दसरत्थ—काठ चढ़ साथ न कीधो।
पांतरी१० इती सह११बड़ो परब—सनमुख झालां कुण१२सहै।
पातरू१३ कैम१४ मोटो परव—कथन एम१५ ऊमा कहै।

अर्थ—मन्दोदरीने रावण राजाको अकेला भेजा, कुन्ती विच-

---

१ छोड़ा २ बदनको बसाने (प्रवेश करनेके) लिये ३ फिर ४ स्वामी ५ माड देश अर्थात् जैसलमेरवाली ६ राजा ७ अकेला ८ डबोकर ९ हाथ १० चूकीं ११ सब १२ कौन १३ चूकूं १४ कैसे १५ ऐसे।

कुन्ताने भी पाण्डु राजाको डबो दिया, कृष्णको मरते हुए गोपियों ने हाथका सहारा नहीं दिया, कौसल्याने चिता पर चढ़कर दशरथ का साथ न किया ; इतनी सब बड़े पर्वको चूक गईं कि सम्मुख झलोंको कौन सहे मैं कैसे ऐसे बड़े पर्वको चूकूं इस तरह उमा कहती है।

गरुड़ चढ़ो गोबिन्द—सांड चढ़ आयो संकर।
इन्द्र चढ़ो इणवार—पीठ एरावत सबर।
हंस चढ़ो सुर जरठ—चढ़ी देवी सिंहबाहण।
चढ़ो सूर सपतास—चढ़ी अपछरा विमाणण।
सांपड़े सूर सुख सामही—ध्रूजवड़े की धांधड़े।
सुर इता आज आयो सती—चढ़ आंजस काठां चढ़े।

अर्थ—गोविन्द गरुड पर चढ़ो, शंकर बैल पर चढ़कर आयो, इन्द्र अब प्रवल ऐरावत (हाथी) की पीठ पर चढ़ो, ब्रह्मा हंस पर चढ़ो, देवी अपने बाहन सिंह पर चढ़ो, सूर्य्य सप्ताश्व घोड़े पर चढ़ो अप्सरा विमानों पर चढ़ो—आज इतने देवता आयो (क्योंकि) स्नान करके सूर्य्यके सम्मुख ध्रुवके बराबर अभिमान चढ़ी हुई सती चिता पर चढ़ती है।

सझ सोले सिणगार—सतव्रत अंग अंग साहि१।
अरकबार(२) मुख ऊग—नीर गंगाजल नाहि।
चोर पहर अस चढ़े—केश वेणी सिर खुल्ले।
देती परदक्खणा—हंसगत राणी हल्ले।
सुर भुवन पैस पहुंता३ सरग—साम तणी मनरंजियौ४।
रूसणो मालदेरावस—भटियाणी इम५ भंजियौ६।

अर्थ—१६ शृङ्गार करके सतीके व्रतको अंग अंगमें लिये हुए (जिसकी) मुखसे (मानो) १२ सूर्य्य उगे हैं गंगाजलसे नहाई चौर

---

१ पकड़े हुए (२) १२ सूरज ३ पहुंचा हुआ ४ प्रसन्न हुआ
५ इस प्रकार ६ तोड़ा, दूर किया।

पहनकर घोड़े पर चढ़के बाल और चोटी खुली हुई प्रदक्षिणा देती रानी हंसकी चाल चलती सुरभवनमें पहुंची, स्वामीका मन राजी हुआ। भट्टानीने अपना रूठना इस तरह राव मालदेवसे दूर किया।

हंस गमण राव रमण—निरमल सारंग नेणी।
इमृत बैण सवजाण—वदन चन्द्रा अह वेणी।
पतवरता पदमणी—सील सुन्दर सतवत्ती।
लक्षण महा लच्छिमी—जिसी गंगा पारबत्ती॥
वड़ सती माल चाढल वड़म—जीव अंग करती जुवा¶।
झिलती झाल आठूँ दिसा—हार कण्ठ जू जू* हुआ।

अर्थ—हंस जैसी चलनेवाली रावमें रमनेवाली मृगकेसे निर्मल नेनवाली, मीठी बोलनेवाली सर्वजान चन्द्रबदनी अहिवेनी प्रतिव्रता पद्मिनी सुशीला सुन्दर सत्यवती, लक्षणोंमें महालक्ष्मी गंगा और पार्वती जैसी, बड़ी सतीने मालदेवको बड़प्पन चढ़ानेके लिये जीव को अङ्गसे अलग किया, आठों दिशाकी ज्वाला झिलते हुए उसके हार और कण्ठ जुदा जुदा होगये।

सभा सचील सिनान—दान सोव्रन (१) विप्रांदे।
धारे चित निजधर्म्म—पषां(२) ऊजला करे वे(३)॥
मेट मोह मृतलोक—काठ भखण (४) सझपेसे।
महाझाल मंगाल(५)—मांहिसिंहासण बैसे(६)॥
करकाल(७)दोष निकलंक करण
तवजे (८) तिण (९) बारां (१०) तणी (११)।
सुरभवन पधारे साम सूं
राणी भांगि रूसणो(१२)॥

¶ जुदा अलग * अलग अलग

(१) सोना (२) पक्ष (३) दो (४) आग (५) प्रज्वलित (६) बैठकर (७) शरीर (८) कहते हैं (९) उस (१०) समय (११ के १२) रूठना

अर्थ—वस्त्र सहित स्नान करके ब्राह्मणोंको सोनेका दान देके नीज धर्म्म धारण किया दोनों पक्ष (सुसराल पीहर) उज्वल करनेके लीये संसारका मोह मिटकर अग्निमें घुसी (और) महाज्वाला प्रज्व-लीत करके उसमें सिद्धों कासा आसन लगाकर शरीरका दोष दूर किया। उस वक्तका (कवि) ऐसा कहता है कि सुरभवनमें पधारकर रानीने अपने स्वामीसे रूठना मिटाया।

भंवर ब्रूहपर जाल—जाल जंघा रंभातर।
कठण पयोधर कुंभ—राख कीन चड़ जमहर१॥
चंपकली निरमली—भषे झाला दावानल।
बाहांडाल मृणाल—कंठहोमे सानू जल २॥
बिधु३ बदन केस कोमल तणां४ दहवेप् जेम६ सहसफण ७।
बालिया ८सती ऊमां बिनें ९अधर बिंब दाड़म१० दसण११॥

अर्थ—भंवोंके भंवरे जलाकर जांघोंके रंभातरु (केले) जलाये। हाथीके कुंभस्थल जैसे कठिन कुच जलाकर राख किये। निर्मल योनिको भी दावानलकी ज्वालाने भख ली। कंवलकी डालियां जैसी बांहों और कैलास शिखर जैसे उज्वल कंठोंको होम किया। चन्द्रमासा मुख और वासुकि नाग जैसे कोमल केश जलाये उमा सतीने बिंबाफल जैसे होंठ और अनार जैसे दांतोंको जलाकर भस्म किया।

होम हंस गत चाल—होम सारंगह१२ लोचण।
सुंद होम सरीर—होम सोव्रन्न १३ सहाब्रन१४।
कंठ होम कोयल्ल—गात होमि चल१५ गैंवर१६।
ब्रूह होम बिहुं१७ भंवर—चीर होमे पाटंबर॥

---

१ आग २ कैलास जैसे ३ चन्द्र ४ तिनको ५ जलाये ६ जैसे ७ हजार फणवाला वासुकी नाग ८ जलाया ९ दोनों १० अनार ११ दान्त १२ हिरन १३ सोना १४ रंग १५ चाल १६ हाथी १७ दोनों

बत्तीस लछण गुण रूप बहण † त्यारां‡ अंतर दाख ‡तण।
होमतां* विहु§ मेला= हुवा सीलमाण लज्जा मघण॥

अर्थ—हंसगतिचालको होमकर मृगीकेसे लोचनको होमा सुन्दर शरीर होमा, सुन्दर महावरण (रंग) होमा। कोयल का सा कंठ होमा हाथी जैसा चलनेवाला गात होमा। दोनों भवें भौंरे जैसी होमी, रेशमके चीर भी जलाये। ३२ लच्छण, गुण, अपार रूपको उनके अन्तर कहते होमते हुए ये तीनों (अर्थात्) शील मान और सघन लज्जा भी इकट्ठे होगये थे।

नमि बंदी १ नह कियो—नमि छंदो २ नह कीधो।
नमि नलियो सुहाग—नमि आदर नह लीधो॥
नमि न कीधो नेह—नमि संतोष न पायो।
नमि न लागी पाय—माण एकोज उपायो ३॥
मिलाय ४ नसकियो मालदे जुग सह ५ जीतो पुरुष जिण ६।
तद७ सधर८ माण ऊमां तणो९ रहीयो जेम१० फणेन्द्रमिण॥

झुककर नमस्कार नहीं किया झुककर अधीनता नहीं की। झुककर सुहाग न लिया और न झुककर आदर लिया झुककर नेह नहीं किया न झुककर संतोष पाया। झुककर पावोंसे न लगी (क्योंकि उसने) एक मान जो संपादन किया था उसको माल देव जैसा पुरुष भी नहीं छुड़ा सका जिसने सब जगतको जीत लिया था। तब ऊमाका प्रबल मान (वासुकि) नागकी मणिकी तरह (ऊंचा) रहा।

माण नेह भंजणो—माण छंदो जड़ तोड़ण।
माण करण बैराग—माण बर नार बिछोड़ण॥

---

†बहुत ‡तिनके ‡कहना *होमते हुए §तीनों =एकत्र

१ नमस्कार २ खुशामद, अधीनता ३ पैदा किया, कमाया ४ रखाना, छुड़ाना ५ सब ६ जिसने ७ तब ८ दृढ़, अखंड, प्रबल ९ का १० जैसे।

माण वेध घर गमण—माण सज्जन होय दुर्जन।
माण पेम अवहरण—माण अवधूतां लच्छन॥
सो ग्रहे माण ऊमा सती तैं१ सत राखे माण तण२।
मेले३ न माण राव मालसूं जली मान जलते जलण।

अर्थ—मान नेहको तोड़नेवाला है मान अधीनताकी जड़ उखाड़नेवाला है। मान वैराग करनेवाला है मान वरवधूकी छुड़ाने वाला है मान घर जानेमें बाधा डालनेवाला है मानसे सज्जन दुर्जन होजाते हैं मान प्रेमका हरनेवाला है मान अवधूतोंका लक्षण है। सो वही मान हे उमा सती तूने ग्रहण किया और उसका सत रखा है। राव मालदेवसे भी उस मानको न छोड़ा और जलते जलते भी अपने मानको लेकर जलगई॥

पिस मज्झ पावक्क—हुई जमहर नख चख जल।
क्रम चौरासी तणा—करे तखंल४ भूमखंडल।
होमदहण विच होत—देह बाली दावानल।
धुके धोम धडहड़ण—बात मुख सहंस वलोवल५।
सामहा६ जोड़ ऊमा सती—देव भाण दिस हाथ दुवे।
मालराव तणी सांभल मरण—होय अङ्गारा राख हुवे॥

अर्थ—अग्निमें प्रवेश करके नखसे शिखा तक जलकर राख हो गई, चौरासी योनिके कर्म्मोंको भूमण्डलमेंही टुकड़े टुकड़े करके आगमें होमते हुए देहको दावानलमें जला दिया। अग्निसे धड़-धड़ाकर धुआं उठा। हजारों मुखोंसे यह बात चौतरफ फैलगई कि उमा सती सूर्य्यदेवताके सामने दोनो हाथ जोड़कर राव मालदेव का मरना सुनकर अंगारे होकर राख होगई।

---

१ तू २ का ३ छोड़कर रखकर। ४ टुकड़े टुकड़े ५ चारों तरफ ६ सामने

ऊणाजी बारहटके बनाये हुए छप्पय—

बप१ बांकम२ बीटियो—तेज झलहल सूरातन।
मन धारण व्रत मुनो—महा अहंकार सहज मन।
भ्रकुटी चढ़ भ्रूहार—अटल त्रिसलोन उतारे।
आग झाल चख अरुण—निमख नह कोप निवारे।
उबारे बोलह्ल पर अमर—पतराखे सतजत पणो।
कीजो कोई ऊमा कली—राणीजाई रूसणो॥

अर्थ—शरीर बांकपनसे घिरा हुआ है सूरापनका तेज मनमें झलक रहा है मनमें मुनिकी वृत्ति (मौन) धारे हुए है मन और स्वभावमें बड़ अहंकार है भ्रकुटी भौवों पर चढ़ी है ललाटके अटल ३ सल उतरे हुए नहीं हैं अग्निकी ज्वालाके समान आंखें लाल हो रही हैं चणभर भी कोपको दूर नहीं किया है अपने बोल अमर करके पृथ्वी पर पूरे किये हैं और सत जत (जितेन्द्रियपने) की पत रखी है ऐसी उमाकी तरहसे कोई रानीजाई (रानी) रूठनाकरना।

धरा माडि३ धिन धिन्न—वंस धिन सोम बखाणो।
जात धिनों जादम—सहर धिन धिन जैसाणो४।
धिन पित मात धिनो—जिकां घर देवी जनमिय।
गढ़ धिन धिन गोरहर—राय आंगण उण रमिय॥
धिन धिन ऊमादे धीवड़ी५—बड़पण सींग बधाड़िया६।
सासरो पीहर मा माण सहु७—तीन पखांनू तारिया॥

अर्थ—माडकी धरती धन्य है चन्द्रवंशकी धन्य काहो जादवकी जातिकी धन्य है जैसलमेर शहर धन्य है धन्य पिता धन्य माता, जिनके घरमें देवी जन्मी। गढ़ धन्य है गोरहर (पहाड़) धन्य है जिसके राय आंगनमें वह खेली है। उमादे बड़ी बेटी धन्य है धन्य

---

१ शरीर २ बांकपन ३ जैसलमेरका देश ४ जैसलमेर ५ बेटी ६ बढ़ाया ७ सब

है जिसने बड़प्पनका सींग बढ़ाया सुसराल, पीहर और ननसालके तीनो घरानोंको तारा।

> घुरिया१ ढोल चिघाय२—गहरघण घोर नगारां।
> अमरवृन्द आणन्द—समर३ हर हर मुख सारां।
> व्रषा पहुप बरसतां—बुही चढ़ बैस विमाणां।
> बसी बास बैकुण्ठ—क्रीत कथ हुई ठिकाणां।
> पटाभ्मर४ आप छूटा पटां—सुगन्दरे रूप सगत्तरे५।
> मुलकते६ बहन राव मालूसूं—मिलिया महल मुगत्तरे७॥

अर्थ—तीन डंकोंसे ढोल बजे, घनघोर नौबतें बजीं देवताओंमें आनंद हुआ सब मुंहसे हर हर करने लगे फूलोंकी वर्षा होते हुए विमानों पर चढ़कर चली बैकुण्ठमें जाकर बसी कीर्त्ति की कथा ठौर ठौर हुई, मस्त हाथीके समान खुलेकेशोंसे शक्तिके रूप से मुलकते (हसते) मुंह मुक्तिके महलमें राव मालदेवसे जाकर मिली।

दोहा।

> ऊमां सतव्रत आगले—भई सती भटियाण।
> उभे दुरंग उजवालिया—जोधाणे जैसाण।*

---

१ बजे २ चोट ३ स्मरण करके ४ मस्त हाथी ५ शक्ति देवी ६ हंसती मुसकुराती ७ मुक्ति।

*यह सब कवित्त बहुत अशुद्ध लिखे हुए मिले थे और जिन चारणोंकी जबानी याद थे वह भी अशुद्धही पढ़ते थे इससे इनका शुद्ध करना बड़ा कठिन होरहा था। परन्तु कविराज श्रीमुरारी-दानजी बारहट श्रीकर्णीसिंहजी दधिवाडिया करनीदानजी और मोतीदानजी किनयाका अत्यन्त धन्यवाद है कि इन महाशयोंसे इन के शुद्ध करने और अर्थ करनेमें बड़ीही सहायता मिली है क्योंकि इस डिंगल भाषाके यही विद्वान हैं।

अर्थ—उमा भट्टानी सतब्रतको आगी लेकर सती हुई (उसने) जोधपुर और जैसलमेरके दोनो कुलोंको उजला किया।

समाप्त।

॥ मूर्ख मुराद ॥

॥ श्रीः ॥

मूर्ख मुराद ।

मिस मेरिया एजवर्थकी "पापुलर टेल्स" की
एक कहानीका मर्म्मानुवाद ।

कलकत्ता ।

८७ मुक्ताराम बाबूस्ट्रीट, "भारतमित्र" प्रेससे
पण्डित कृष्णानन्द शर्म्मा द्वारा
मुद्रित और प्रकाशित ।

सन् १९०६ ई० ।

॥ श्रीः ॥

मूर्ख मुराद।

[१]
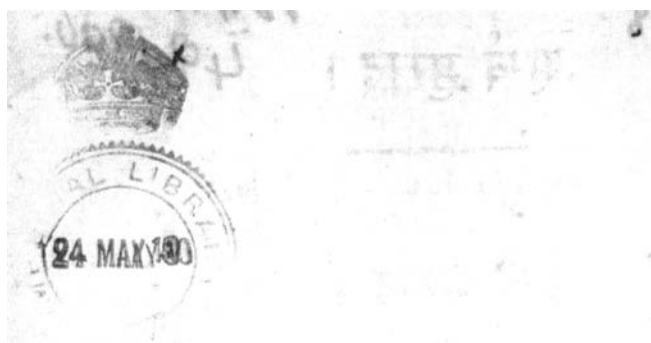
बगदादके खलीफा हारूं रशीदकी तरह पिछले समयके अनेक बादशाह रातको भेष बदलकर अपनी प्रजाका हाल देखने निकलते थे। रूमके कई सुलतान भी इसी ढङ्गसे अपनी प्रजाका दुःख सुख मालूम किया करते, विशेषकर सुलतान आजमको इसका बड़ा शौक था। वह नित्य आधी रातको प्रधानमन्त्रीके साथ महलके चोरदरवाजेसे निकलकर अपनी राजधानी कुस्तुन्तुनियाके गली कूचोंमें फिरा करते थे। इससे हाकिम अपने कामों पर मुस्तैद रहते और प्रजा बेखटके पैर फैलाकर सोती थी। इसके सिवा सुलतानको सदा विचित्र घटनाओंके देखने और अद्भुत रहस्य सुननेका भी मौका मिलता था। एक रात इसी प्रकार घूमते फिरते सुलतान एक रस्सी बटनेवालेकी दुकानके पास से निकले। उसे देखकर उन्हें "अलिफलैला" के ख्वाजाहसन रस्सी बटनेवाले और साद और सादी नामके उसके दो मित्रोंवाली कहानी याद आगई जिसमें यह प्रश्न उठा था कि आदमीकी तदबीर बड़ी है या तकदीर ?

मन्त्रीसे उस कहानीका जिक्र करके सुलतानने पूछा, तेरी इस विषयमें क्या राय है—भाग्य या यत्न, कौन बली है ? मन्त्रीने उत्तर दिया, जहांपनाह इस गुलामकी तुच्छबुद्धि तो यह कहती है कि इस संसारमें बुद्धिमानी और दूरदर्शितासेही मनुष्य कुछ उन्नति कर सकता है भाग्य या किस्मतका इसमें कुछ दखल नहीं।

सुलतानने कहा, मेरी रायमें तो भाग्यही बली है। हम सदा सुना करते हैं कि अमुक भाग्यवान और अमुक अभागा पैदा हुआ। अगर वास्तवमें यह बात कुछ न होती तो लोग इस पर विश्वास क्यों करते ? सो मन्त्री, कुछ न कुछ बात तो जरूर है। मन्त्रीने आदाब बजा लाकर कहा—बन्दगानआलीसे यह गुलाम बहस नहीं कर सकता। सुलतानने जिद करके कहा—नहीं, तू साफ साफ बेखटके बातकर, मैं आज्ञा देता हूं।

मन्त्री बोला—खुदावन्द, साफ बात तो यह है कि इस संसारमें जिसने बुद्धिमानी और दूरदर्शितासे ऊंचा पद पाया और सुखी मालूम हुआ वही भाग्यवान कहलाता है। जो मूर्ख है और संसारकी दौड़में सबसे पीछे पड़ा है उसेही सब अभागा कहते हैं। कारण यह कि सर्वसाधारण भाग्यवान और अभागे दोनोंकी जीवन कथाओंकी केवल बाहरी बातें जानते हैं, किन यत्नोंसे और कैसी सिरतोड़ मिहनत करके दूरदर्शी बुद्धिमानने अपना दरजा प्राप्त किया और कब और कहां छोटे छोटे पर बड़े जरूरी अवसरों पर चूककर मूर्ख अभागा कहे जानेके योग्य हुआ, इन सब बातोंकी सर्वसाधारणको जरा खबर नहीं होती। इसलिये हर आदमीकी भली या बुरी अवस्था उसीके भले या बुरे कामोंका फल स्वरूप है। भाग्यका झगड़ा उसमें लेशमात्र भी नहीं। दूर क्यों जाय, इसी नगरमें दो भाई अपनी भली और बुरी किस्मतके लिये प्रसिद्ध हैं। बड़ेका नाम है अभागा मुराद और छोटेका भाग्यवान सालहउद्दीन। अगर हजरत सुलतान इन दोनों भाइयोंकी जीवन कथाएं सुनें तो मुझे विश्वास है कि छोटाभाई दूरदर्शी और बुद्धिमान साबित होगा और बड़ा निरा मूर्ख।

सुलतानने पूछा—यह दोनों भाई कहां रहते हैं ? मैं उनकी कथा सुनना चाहता हूं। मन्त्री बोला—बस यहीं पासवाले चौकमें, आइये, यों चलिये गुलाम पता लगाता है।

सुलतान और मन्त्री ज्योंही पासवाले चौकमें पहुंचे किसीके फूट फूटकर रोने और सिर पीटनेकी आवाज सुनाई दी। दोनों इसी आवाज पर चले। एक मकानके दरवाजे पर पहुंचे। देखा दरवाजा खुला था। अन्दर घुस गये। ऊपरके किसी कमरे में रोनेकी आवाज मालूम हुई। दोनों दबे पैरों ऊपर चढ़ गये और एक कमरेमें दाखिल हुए। देखा एक अधेड़ पुरुष सिर पर हाथ धरे बैठा रोरहा था और पासही एक बड़ा खूबसूरत चीनीका बरतन चूरचूर हुआ पड़ा था। मन्त्रीने उस आदमीसे पूछा, जवान ! तुझ पर ऐसी क्या विपद पड़ी है जो यों फूट फूट कर रोता है ? उस आदमीने इन दोनोंको आश्चर्य्यसे देखा और उत्तरमें उस टूटे हुए बरतनकी ओर इशारा कर दिया। सुलतान ने बरतनके दो चार टुकड़े उठाकर देखे और कहा—इसमें शक नहीं कि यह बड़ी उत्तम चीनी मट्टीका बरतन था पर क्या इस एक बरतनके टूट जानेसे किसीको इतना दुःख होसकता है ? वह मर्द बोला—सज्जनो ! तुम्हें मालूम नहीं कि मेरे दुःखकी कहानी कितनी बड़ी है ! क्या आपने अभागे मुरादका नाम नहीं सुना ? मैं वही कमबखत हूं, मेरी कहानी अगर आप सुनें तो आपको मेरे यों रोने पीटने पर आश्चर्य्य न रहेगा। आप परदेशी मालूम होते हैं इसलिये आजकी रात मेरेही घर ठहरिये। मन्त्रीने कहा—हम मवस्सलके व्यापारी हैं अपने साथियों सहित सरायमें ठहरे हैं। रातभर अगर बाहर रहेंगे तो हमारे साथी चिन्ता करेंगे। तुम अपनी कहानी कहो हम बड़े ध्यानसे सुनेंगे। ऐसे हमदर्द सुनने वाले पाकर मुरादने अपना हाल यों बयान किया—

"सज्जनो ! मेरा पिता इसी नगरका एक बड़ा व्यापारी था। मेरे जन्मसे एक दिन पहले उसने स्वप्न देखा कि जन्म लेतेही मेरा मुंह कुत्तेका और दुम अजदहेकीसी है। मानो मेरा ऐसा भद्दा नकश छिपानेके लिये उसने जल्दीसे स्वयं हजरत सुलतानके सिरसे पगड़ी उतारकर मुझे ढक दिया। इससे सुलतान नाराज हुए उन्होंने

उसी समय मेरे पिताके वधका हुक्म दिया। यह सुनतेही वह मारे डरके कांपने लगा। झट उसकी आंखें खुल गईं। इस स्वप्नका पिता पर बड़ा असर पड़ा उसके दिलमें यह बात जम गई कि मुझ अभागेको देखतेही उस पर बड़ी विपद पड़ेगी, जान भी जाय तो कोई आश्चर्य्य नहीं। वह यह देखनेके लिये भी न ठहरा कि ईश्वरने मुझे सचमुच कुत्ते का मुंह और अजदहेकी दुम देकर संसारमें भेजा था या साधारण मनुष्यके चोलेमें। वह उसी रातको एक बड़ी यात्राकी तैयारी करके सवेरे हलब चला गया। उसके जातेही यह अभागा इस संसारमें आया। पिताके स्वप्नकी बात याद करके मेरा नाम भी अभागा मुराद रखा गया। पिता सात वर्ष तक बाहर रहा इससे मेरी पढ़ाई लिखाई सब चौपट हो गई। एक दिन मैंने अपनी मासे पूछा—मा, मुझे सब अभागा क्यों कहते हैं? उसने बात टालकर कहा—जब तू बड़ा होकर अच्छे अच्छे काम करेगा तो कोई अभागा नहीं कहेगा। एक लौंडी भी पास बैठी थी उसने सिर हिलाकर मासे कहा—बीबी, यह न कहो, कुछ आदमी जन्मसे कमबख्त पैदा होते हैं उन्हें दुनियामें कभी सुख नहीं मिलता। मुराद भी नामुराद पैदा हुआ है। लौंडीकी इन बातोंका मुझ पर बड़ा असर पड़ा उसी घड़ीसे मुझे पूरा यकीन होगया कि मैं सचमुच भाग्यहीनही पैदा हुआ। दुनियामें मेरा किया कोई काम सफल न होगा। रातदिन मैं इसी चिन्तामें डूबा रहता, यहांतक कि हर घटनामें मुझे अपने भाग्यका दोषही दिखने लगा। मैं आठवां साल पूरा करचुका था कि पिता विदेशसे लौटा पर मुझे देखकर उसे कुछ खुशी न हुई वह मुझसे अलग अलग रहने लगा। पिताको लौटे एक साल हुआ था कि मेरे छोटेभाई सालहउद्दीनका जन्म हुआ और पैदा होतेही उसका नाम भाग्यवान पड़ गया क्योंकि उसी समय पिता के एक भटके हुए बहुमूल्य जहाजके बन्दरगाहमें आजानेकी खबर आईथी। इस जहाजके आजानेसे हम मालामाल होगये। ज्यों ज्यों

मेरा भाई बढ़ने लगा हमारे घरमें एक न एक शुभ बात होती रही और पिताको भी व्यापारमें खूब लाभ होता रहा। बचपनही से सालह होशियार दूरदर्शी और बुद्धिमान था जिस काममें हाथ लगाता वही बड़ी खुशीसे होता। सब उसकी समझ और लियाकत की प्रशंसा करते और मेरे हिस्सेका सौभाग्य भी उसीमें कूट कूटकर भरा हुआ समझते।

[२]

सालह २० सालका था जब पिताकी मृत्यु हुई। मरनेसे पहले उन्होंने सालहको पास बुलाकर कहा—मूर्खतासे व्यापार करके मैं सब धन खोबैठा हूं मेरा सब कारबार बरबाद हुआ पड़ा है सो तुम्हारे लिये छोड़ जानेको मेरे पास कुछ नहीं है। हां, पुराने समयके दो बहुत उत्तम चीनीके बरतन मेरे पास हैं उन पर कोई मन्त्र लिखा है। लोग कहते हैं कि जिसके पास इनमेंका एक बरतन भी हो उसका घर लक्ष्मीका निवासस्थान बनेगा सो यही दो बरतन मैं तुझे देता हूं तेरे भाई कमबख्त मुरादको एक भी नहीं देसकता क्योंकि वह ऐसा अभागा है कि उसे एक न एक दिन तोड़ डालेगा। पिताके मरनेके बाद सालह ने मुझसे कहा—भाई, इन दोनों बरतनोंमें हमारा तुम्हारा हिस्सा बराबर है, एक तुम लो और ईश्वरका नाम ले किसी धन्धेसे लगो। मैंने मुंह बनाकर कहा—भाई, तुम जानते हो मैं जन्मका अभागा हूं जैसा पिताजी कह गये अवश्य यह बरतन मुझसे एक दिन टूट जायगा सो मैं इसे नहीं ले सकता। सालहने मुझे तसल्ली देकर कहा कि भाग्य वाग्य सब झूठी बात है मिहनत करके मनुष्य सब कुछ कर सकता है सो तुम एक बरतन लो और कोई काम शुरू करदो। खैर, सालहके बहुत कहने सुनने पर मैंने एक बरतन लेलिया पर मुझे दृढ़ विश्वास था कि उस बरतन की अन्तिम गति मेरेही हाथ होगी। हम दोनोंने अपना अपना

बरतन खोलकर देखा तो उनमें एक प्रकारका पौडर भरा था मेरे हिसाब वह राख या मट्टी थी पर भाईने उसे कई रोज तक आजमाने पर एक प्रकारका रङ्ग बताया जो मामूली लाल रङ्गमें मिलतेही बहुत चटकीला और पक्का गुलनार रङ्ग होजाता था। भाईने मुझे शरीक करके इस अपूर्व रङ्गको एक दुकान खोलदी। हमारे पिताके एक मित्र द्वारा यह रङ्ग हजरत सुलतानके महल-सरामें पहुंच गया, सुलताना आलियाने उसे पसन्द किया। फिर क्या था, अमीर गरीब सब इसकी कदर करने लगे और साथही हमारी दुकान भी खूब चमक गई। कहीं यह न समझियेगा कि दुकान की रौनक और आमदनी बढ़ानेमें मैंने कुछ कोशिश की, नहीं; जो हुआ सालहकी बदौलत। उसीकी मीठी बातों और हंसते हुए चेहरेसे ग्राहक खुश होते और पैसेकी जगह सवा पैसेकी चीज खरीदते। मेरी रोनी सूरत और कराहनेकीसी आवाजसे लोग अलगही रहते, जहां तक मुमकिन होता मेरे समयमें दुकान पर न आते।

एक दिन एक अमीर बीबी दो हबशी और सरकेशियन लौंडि-योंके साथ दुकानमें आई। उसके वस्त्र बहुमूल्य थे, दोनो लौंडियां बड़े अदबसे उससे बात करती थीं। भाई उस समय कहीं बाहर गया था इसलिये दुकानमें अकेला मैंही था। बीबीने इधर उधर फिरकर दुकानकी चीजें देखीं और अन्तमें मेरे चीनीके बरतनके पास खड़ी होगई और उसे खूब देखकर मुझसे उसका दाम पूछा। पिताने मरते समय जो कहा था उसका मुझे पूरा यकीन था, मुझे विश्वास था कि यदि मेरा बरतन मेरे पास रहेगा तो एक दिन उस पर लिखे मन्त्रके जोरसे लक्ष्मी सदा मेरेही हाथमें रहेगी। यही सोचकर मैंने बीबीसे कहा कि मैं बरतन नहीं बेचूंगा। वह बहुत नाराज हुई, जिद करने लगी और मुंहमांगा दाम देनेको तय्यार हुई पर इस बन्देने ना से हां न की अन्तमें वह आगबबूला होकर चल दी। थोड़ी देर बाद भाई आया उससे मैंने सब हाल

कह सुनाया और बड़े घमण्डसे कहा—भाई, मेरे भाग्यमें ईश्वरने जो कमी की उसके बदले बुद्धि कुछ अधिक दी होगी, इसीलिये आज मैं अपनी लक्ष्मीका मन्त्र बचा सका, तुमसे कहे तो तुम भी अपना बरतन न बेचना। पर भाईने खुश होनेकी जगह दुःख प्रगट किया। कहा—तुमने बड़ी भूलकी जो मुंहमांगा दाम पाने पर भी एक चीनीका बरतन न बेचा और मन्त्र वाली बेहूदा बात पर यकीन करके ऐसा अवसर हाथसे जाने दिया। दूसरे दिन वह बीबी फिर आई और सालहने अपना बरतन उसके हाथ दस हजार अशरफियों पर बेच दिया। इतनी अशरफियां देखकर मैं अपनी भूल पर पछताने लगा। पर तब क्या होसकता था। इस भूलका फल यही नहीं हुआ कि मैं दस हजार अशरफियां खोबैठा, एक बड़ी विपद भी मुझ पर आपड़ी। जिस बीबीने सालहका बरतन खरीदा वह सुलतानाके महलकी थी और उनकी विश्वास-पात्र खवास थी। मुझ पर उसे इतना क्रोध था कि उसने दुकान में आना छोड़ दिया और एक दिन एक हबशी गुलामके हाथ लिख भेजा कि अगर मेरा भाई अपनी भलाई और सुलतानी महलोंको खुश रखा चाहता है तो मुराद नामुरादको अपने साथ से अलग कर दे नहीं तो सुलतानाके कोपमें पड़ेगा। सालहने मुझे छोड़नेसे इनकार किया पर मैं नहीं चाहता था कि मेरी बदौ-लत मेरा भाई विपदमें पड़े। मैं उससे बिना कहे एक दिन घरसे निकल गया। कहां जाऊंगा कैसे गुजर करूंगा इसका कुछ खयाल न किया। बहुत देर तक इधर उधर घूमता रहा। जब भूख लगी तो कुल मामला किसी और दृष्टिसे दिखने लगा। एक गलीसे निकलकर ज्योंही बाजारमें पहुंचा एक नानबाईकी दुकान देखी। भूखसे व्याकुल था ही, झट अन्दर चला गया और नानबाईसे रोटीका सवाल किया। नानबाईने कहा—अगर तू आजके दिन मेरे कपड़े पहनकर नगरमें रोटी बेचना कबूल करे तो मैं तुझे पेट भर खानेको दूंगा। मैंने कहा—मंजूर, तू मुझे पहले

खानेको दे फिर मैं रोटी बेच आऊंगा। उसने यह स्वीकार किया। मैं रोटी खाकर नानबाईके वस्त्र पहन रोटी बेचने निकला। अब सुनिये कि उनदिनोंमें नानबाइयोंने बेईमानीसे रोटीकी तौलमें कमी करके बहुतोंको ठगा था इससे नानबाइयोंके विरुद्ध उस समय बड़ा जोश फैला हुआ था। नगरनिवासी इतने क्रोधमें भरे थे कि कोई नानबाई नगरमें फिरकर रोटी बेचनेका साहस नहीं करता था। पर मुझ बदबख्तको इसकी क्या खबर थी, हां यह जरूर है कि मुझे नानबाईके आप रोटी बेचने न जानेसेही होशियार होना चाहिये था पर उस समय मुझे यह खयाल न आया। खैर, ज्योंही मैं गलियोंसे निकलकर बड़ेबाजारमें पहुंचा और रोटियोंकी पहली आवाज लगाई लोग लाल पीली आंखोंसे मेरी ओर देखने लगे। पर मैंने कुछ ध्यान न दिया। फिर बाजारी लड़कोंने पत्थर फेंकने शुरू किये इसे भी मैं उनकी स्वाभाविक शरारत समझा और उनके मा बापोंको बुरा भला कहता जरा और आगे बढ़ा था कि एक दुष्टने रोटी लेनेके बहाने मुझे पास बुलाया। पास पहुंचतेही उस ने मुझे एक तमाचा मारा और कहा कि बदमाश, बेईमान! आज फिर हमें ठगने आया है! मैं कुछ कहा चाहता था कि चारों तरफसे मुझपर तड़ातड़ पटापट धमाधम थप्पड़ों और मुक्कोंकी वर्षा होने लगी। बहुत दुहाई तिहाई मचाई पर किसीने न सुनी। खूब मारपीटकर लोग मुझे प्रधान मन्त्रीके पास लेगये। उन्होंने रोटीमें दगाबाजी करनेकी बात सुनकर मेरे वधका हुक्म देदिया! मैं उनके पैरों पर गिर पड़ा और रोकर कहा कि मैं वह नानबाई नहीं हूं। मैं तो सिर्फ आजके लिये इस इस तरह रोटी बेचने निकला हूं। लोगोंने भी ध्यानसे देखा तो उन्हें यकीन होगया कि अवश्य किसी नानबाईने मुझे धोखा दिया था। प्रधान मन्त्री को भी कुछ दया आई, उन्होंने मुझे छोड़ देनेका हुक्म दिया।

अब मुझसे कुस्तुन्तुनियामें न ठहरा गया। उसी दम नगरसे भागा। कुछ दूर जाने पर सुलतानी फौजकी एक पलटन मिली।

वह मिसर देशको जारही थी। मैं भी उन सिपाहियोंके साथ हो गया। हमारा जहाज कुस्तुन्तुनियासे चलकर कई दिनमें मिसर पहुंचा। रास्ते भर मुझे विश्वास था कि मेरे दुर्भाग्यके कारण जहाज जरूर डूब जायगा पर ऐसा नहीं हुआ। जहाजसे उतर कर हम सब अलअर्शकी छावनीमें चले गये। सफरकी थकावट अभी नहीं मिटी थी कि फिर मेरी शामत आई। एक रात जब सब सिपाही सो रहे थे मैं चांदनीकी बहार देखने खेमेसे बाहर निकला। देखा चांदनी खूब छिटकी थी हर तरफ सन्नाटा था। टहलता टहलता डेरेसे कुछ दूर गया था कि एक ओर बालूमें कुछ चमकता दिखाई दिया। उठाकर देखा तो एक बहुमूल्य हीरेकी अंगूठी थी। सवेरा होतेही उसे प्रधान अफसरके सामने पेश करनेका इरादा करके मुझ अभागेने वह अंगूठी अपनी उंगली में डाल ली यह न सोचा कि इतनी ढीली अंगूठी उंगलीमें कैसे रहेगी। खैर, अपने डेरेकी ओर फिरा और राहमें सोचता जाता था कि प्रधान अफसर मेरी ईमानदारीसे खुश होकर अगर कुछ इनाम दें तो लूंगा या नहीं। इतनेमें एक डेरेके पास बंधेहुए एक खच्चरसे मेरी टक्कर हुई। उस दुष्टने आव देखा न ताव, कसके दो लातें मेरी पीठमें जमा दीं। मैं आह करके वहीं गिर पड़ा साथही अङ्गूठी भी उंगलीसे कहीं गिर पड़ी। अपना कुल दर्द भूलकर मैं झट उसे ढूंढ़ने लगा। पर इस खड़बड़ाहटने डेरेमें सोये हुए सिपाहियोंको जगा दिया। बेवक्त जागनेसे नाराज होकर वह बकते झकते बाहर निकले और मुझे चोर चोर कहके पकड़लिया। मैं हजार कहता रहा कि यारो! मैं चोर न चोरका पड़ोसी, मैं तो तुम्हारेही साथवाला हूं। जरा सैर करके अपने डेरेको लौट रहा था कि यह नामाकूल खच्चर मुझसे भिड़ गया। मेरी पीठ पर तुम उसकी टापोंके निशान देख सकते हो। इतनेमें और सिपाही वहां जमा होगये, रोशनी भी वहां आई। एकाएक किसी की निगाह अङ्गूठी पर जा पड़ी। लोगोंने अब तो मुझे पक्का चोर

समझा। सब कांव कांव करने लगे। कहा—क्यों बे, सैरके बहाने भले आदमियोंको लूटता है। यह अङ्गूठी तू कहांसे लाया ? मैंने उसके पड़े मिलनेकी बात कही तो सब हंसने लगे। कहा बड़ा फ़रेबी है किसीने कहा पुराना चोर है, मारो सूअरको! बस फिर क्या था बेभावकी पड़ने लगी और इसी तरह मारते पीटते लोग मुझे प्रधान अफसरके पास लेगये। उसने बिना कुछ कहे सुने बेत लगानेका हुक्म दिया जो उसी समय लग गये। इस पर भी कुछ लोग कहते थे कि पहली चोरियोंके मालका पता पूछनेके लिये मुझे और बेत लगना चाहिये। सज्जनो! किसीकी पड़ी अङ्गूठी पाकर अगर मैं छोटी उंगलीमें न डालता तो क्यों वह गिरती और क्यों मुझे बेत पड़ते। पर भाग्यहीमें ऐसा लिखा था इसमें कोई क्या कर सकता है!

बेतोंकी चोटके जखम अच्छे होजाने पर मैं फिर इधर उधर सैरको जाने लगा। एक दिन चायखानेमें बैठा कहवा पीरहा था कि वहां एक आदमी आया और चाय पीते पीते जिक्र किया कि उसकी एक अंगूठी कहीं गिर पड़ी और मिलती नहीं। मैंने सोचा कि जरूर यही आदमी उस मनहूस अंगूठीका मालिक है, मैंने उससे अंगूठीका सब हाल कहा और लेजाकर उस अफसरका डेरा बता दिया जिसके पास अंगूठी जमा थी। अंगूठी पाकर उस भले आदमीने जो असलमें एक व्यापारी था, मुझे दो सौ रुपये इनाम दिये। यह न समझिये कि दो सौ रुपये पाकर मुझे सुख मिला, नहीं, और भी विपदमें पड़ गया। हुआ यह कि एक रातको जब मैंने समझा (पत्थर पड़ें ऐसी समझ पर!) कि डेरेके और सिपाही सोरहे हैं अपने दो सौ रुपये कमरसे खोल चुपके चुपके बड़े शौकसे गिनने लगा। रातदिनमें जब मौका पाता अपने रुपये गिनकर कलेजा ठण्डा कर लेता। खैर रुपये खूब गिनकर मैं सोगया दूसरे दिन सवेरेही मेरे डेरेवालोंमेंसे पांच चार आदमियोंने जो पहले मुझसे बोलते तक न थे, बड़े आदरसे अपने साथ

रोटी खानेको बुलाया और सब बड़ी मुहब्बत जताने लगे। मैं भी गधेकी तरह फूलकर उनमें हंसता बोलता रहा, अन्तमें भोजन के बाद शरबतकी बारी आई। सबने पिया, मैंने भी पिया। शरबतमें ईश्वर जाने क्या मिला था, मैं पीनेके बादही ऊंघने लगा और अन्तमें खूब गहरी नीन्दमें पड़ गया। जब जागा तो देखा एक सूखे खजूरके वृक्षके नीचे छावनीसे दूर पड़ा हूं! बड़ा आश्चर्य हुआ, धीरे धीरे कुल घटना याद आई, साथही रुपयोंके बटुए पर हाथ गया. बटुआ कमरमें था. कुछ भारी भी मालूम होता था पर खोल कर देखा तो रुपयोंसे नहीं, पत्थरोंसे भरा था। समझ गया कि यह उन्हीं मक्कार साथियोंकी शरारत थी, मालूम हुआ कि उन्होंने रातको मुझे रुपये गिनते देख लिया था। अफसरोंसे शिकायत की पर कुछ फल न हुआ, हां मेरे साथी दुश्मन होगये और अकेला पाकर सदा मारा करते और कई तरह से दुःख देने लगे। इन सब बातोंसे बहुत दुखी होकर तभीसे मैंने अपना नाम कमबख्त मुराद रखा और तभीसे सज्जनो, मुझे अफीम खानेकी लत पड़गई। ज्यों ज्यों अफीम ज्यादा खाने लगा देखा कि दिल खुश रहता और सब रंज और दुःख भूले रहते। छावनीके पास एक मैदान था वहां सुलतानी फौज कभी कभी तीर कमानसे कवायद और चान्दमारी करती थी। उसी मैदानके एक कोनेमें आरामसे बैठकर मैं रोज अफीमकी चुसकी लगाता और हुक्का पिया करता। एक दिन नशेमें जरा ज्यादा खुशी मालूम हुई, उठकर मैदानमें कभी दौड़ता कभी टहलता, कभी हंसता कभी गाता और कहता कि अब मेरी शामतके दिन गये, मैं कम-बख्त नहीं रहा। इतनेमें एक सिपाहीने दूरसे चिल्लाकर कहा कि तीर चल रहे हैं अलग हटजा नहीं मर जायगा। मैं उस समय बेहद खुश होरहा था, जवाब दिया। नहीं नहीं मैं अभागा नहीं हूं, अब मेरी कमबख्तीके दिन गये मानो इसी बातको काटनेके लिये ठीक उसी वक्त एक तीर सनसनाताहुआ आया और मेरी बांह

छेदकर उसीमें अटक गया, मैं चिल्लाकर वहीं गिर पड़ा, लोग आये मुझेही बुरा भला कहते और जरूरतसे ज्यादा तकलीफ देकर फौजके हकीमके पास उठा लेगये। तीर निकाल कर मेरे जखम का इलाज किया गया। इस घटनाके दो दिन बादही हुक्म हुआ कि फौज कुस्तुन्तुनियाको कूच करेगी। कुल छावनीमें सफरकी तैयारी होने लगी, मुझे भी अपनी फिक्र हुई, यह डर था कि कहीं मुझे जखमी देखकर वहीं न छोड़ जायं, कई सिपाहियोंकी मिन्नतकी, दो चारने मुझे ले चलना मंजूर किया। कूचका दिन आया, सबेरेहीसे सेना चलने लगी, मेरे साथी भी मुझे बारी बारी से उठाकर चलने लगे। कुछही दूर जाकर, साथियोंको मेरा उठाना कठिन होगया, कुछ तो साफ साफ इनकार करगये। प्यासके मारे मुझसे बोला नहीं जाता था। मैंने एकसे कहा जरा सा पानी पिला दो उसने कहा पासवाले कुएसे ले आता हूं यह कह कर वह गया पर फिर न लौटा, दूसरे साथी भी उसे देखनेके बहाने खिसकगये। मैं जखमी, कमजोर धूपमें जलते हुए उस रेतीले मैदानमें अकेला रह गया। प्यास और गरम बालू दोनो तड़पा रही थीं। एकाएक उस दुष्ट साथीको बातका ख्याल आया कि कोई कुआ यहां कहीं पासही था, हिम्मत करके, गर्म बालूमें एक हाथ और घुटनोंके बल घिसकाता उसी ओर चला जिधर वह दुष्ट गये थे। कितनीही दूर तक घिसकाता चलागया पर पानीका कहीं चिन्ह न पाया, और पड़नेसे मेरे भरते हुए जखमसे खून निकलने लगा, साथही उन दुष्टोंकी कुएवाली बात भी गप मालूम हुई, वहां पानी दूर तक नहीं था। अब हिम्मत नहीं रही, आखोंमें मौतकी शकल फिर गई, अपने भाग्यका लिखा समझ कर वहीं मरनेको पड़गया!

[३]

ऐसे कबतक पड़ा रहा नहीं कह सकता। जब होश होने लगा अपने गिर्द लोगोंको बोलते सुना और ऐसा मालूम हुआ कि

मुझे कोई लिये जारहा है। आंखें खोलीं देखा ऊंट पर सवार व्यापारियोंके एक काफिलेके साथ था। एक गुलामने मुझे होशमें आया देख और काफलासे खबर की। वह और व्यापारियों सहित मेरा हाल पूछने आया। उससे मालूम हुआ कि राहमें मुझे अधमरा पड़ा देख उसने दया करके साथ लेलिया और मिसरकी राजधानी काहिराको लिये जाता था। मैं उसे इसके लिये धन्यवाद दियाचाहता था कि एक व्यापारी आगे आकर मुझे भलीप्रकार देखने लगा। मैंने भी उसे पहचाना, वही अङ्गूठी वाला व्यापारी था जिसने मुझे दो सौ रुपये इनाम दिये थे। उसने तसल्ली देकर कहा कि तुम मेरे साथ हो, किसी बातकी चिन्ता मत करना। खैर, इससे मेरी और भी ढारस बंधी और धीरे धीरे मैं बिलकुल अच्छा होगया। व्यापारीने मुझे बेकार पाकर अपने नौकरोंमें रख लिया और मुझ पर बड़ी कृपा रखता। एक दिन मेरी कुल कथा सुनकर उसने कहा कि तेरे कुल दुःखोंका इलाज यही है कि आजसे तू कोई काम बिना दूसरेको सलाहके न किया कर, जहांजहां काफिला उतरे अपने मालिकका माल ऊंटोंसे उतरवाना, फिर लदवाना और उसे दूसरोंके मालमें न मिलने देना, बस यही मेरा काम था। पर यह भी मुझसे ठीक न हुआ। जब हमारा काफिला समुद्र किनारे पहुंचा, काहिरा जानेवाले व्यापारी वहां जहाज पर सवार होने लगे, मेरा मालिक भी इन्हींमें था। काफले से अलग होते समय मैंने उसका कुल माल ऊंटोंसे उतारा पर रोज की तरह गांठें गिनीं नहीं इससे जब काफिला आगे बढ़ गया और हम जहाज पर चढ़ने लगे तो देखा कि रुईकी तीन गांठें कम थीं। मेरे मालिकने यह सुनकर मुझसे केवल इतनाही कहा कि आज जब हम काफिलेसे सदाके लिये अलग होने लगे थे तभी तो गांठें ध्यानसे सम्हालनेकी अधिक जरूरत थी। इतना कह उसने दो सरकारी सवारोंको कुछ देकर काफिलेके पीछे दौड़ाया वह थोड़ी देरमें गांठों सहित लौट आये। मालूम हुआ कि एक व्यापारीके

मालके साथ चली गई थीं। जहाज खुलनेही वाला था, बहुत जल्द माल लदवा कर हम भी उस पर पहुंचे। कप्तानने रूईकी गांठें जहाजके मालगुदाममें रखनेसे इनकार किया, कहा जगह नहीं है। लाचार गांठोंको ऊपरवाले डेक (छत) परही रखना स्वीकार किया, मैंने मालिकसे कह दिया कि रातदिन उनकी रखवाली करनेके लिये मैं खुद डेक पर रहूंगा, वह इससे निश्चिन्त होकर और यात्रियोंके साथ नीचेवाले खण्डमें चला गया। जहाज पर मैं बड़ा खुश था रूईकी गांठोंके सहारे आरामसे बैठकर अफीम घोला करता और हुक्के के दम लगाता। अन्तमें हमें फिर पृथिवीके दर्शन हुए। हमारे जहाजने नील नदीमें प्रवेश किया। राजधानी काहिरा केवल एक दिनका रास्ता रह गया था। काहिरा पहुंचनेकी खुशीमें उस रात मैंने जरा ज्यादा अफीम घोली और भोजन करके गांठोंके सहारे हुक्का पीता पीता सोगया। आधीरात बीती थी कि किसीने मुझे जोरसे ठोकरें मारकर घोर नींदसे जगाया। आंखें मलता घबराकर उठा देखा कि रूईकी गांठें जल रही थीं मेरे कपड़ोंमें भी आग लगी थी और जहाजके पाल आदि तक भी पहुंच गई थी। आगकी खबर पहले दो जहाजियों को हुई उन्होंने कप्तानको होशियार किया फिर तो कुल जहाजमें हलचल मच गई पर बन्देको खबर न हुई। सब घबराकर ऊपर आये। मेरे मालिकने जब मुझे और मेरेहुक्केको एकओर औंधा पड़ा देखा, कुल मामला उनकी समझमें आगया। मुझअभागेकी चिलम की आगसेही गांठोंमें आग लगी सोतेमें मेरेही हाथसे हुक्का उलट-गया था। और व्यापारी यह मालूम करके बहुत बिगड़े और एकने मुझे जगानेके बहाने कसकर दो लातें लगादीं। आंख खुलतेही सिर पर चपतों और लानतमलामतकी बौछार होने लगी। खैर बड़ी मुशकिलसे आग बुझी पर मेरा मालिक और एक दो व्यापारी बहुत जल गये। आग बुझतेही लोगोंकी निगाह मुझपर फिरी। सबने कप्तानसे कहा कि जबतक जहाज बन्दरमें न पहुंचे

इस अभागीको बान्ध रखो नहीं तो कुछ और विपद लावेगा। कप्तान तो यह चाहताही था। उसने मुझे खूब कसकर बन्धवा दिया और जब काहिरा पहुंचे तभी खोला। काहिरा पहुंच कर जहाजसे उतरतेही मेरे मालिकने मुझे अपने पास बुलाया और पचास रुपये देकर कहा, यह ले और मुझसे अलग हो तू सचमुच अभागा है ईश्वर तुझसे बचावे। मालिक बुरी तरह जल गया था इससे मैंने कुछ जवाब देना उचित न समझा और पचास रुपये कमरमें बांध नगरमें प्रवेश किया।

मैं कई बाजारों और गलियोंसे होकर चौकमें पहुंचा। सोचने लगा कि ऐसे किस काममें यह रुपये खर्च करूं जो अधिक लाभ हो और मूर्ख भी न कहाऊं। इसी सोचमें था कि पीछेसे किसी ने मेरा नाम लेकर पुकारा। आश्चर्य्यसे फिरकर देखा तो अपनी फौजके राग़ब यहूदीको सामने पाया। यह यहूदी फौजमें आता जाता था और वहांसे पुरानी वर्दियां और दूसरा रद्दी सामान खरीदा करता। अफसरों और सिपाहियोंको कर्ज भी देता था पर सूद सैकड़े पीछे सौके हिसाबसे लेता था। सब उससे बड़ी घृणा करते। मुझे भी उस दुष्टके कुछ रुपये देने थे सो सामना होतेही उसने तकाजा शुरू किया। मैंने हिसाब मांगकर देखा तो सूद दर सूद जोड़कर पाजीने कुल जमा असलसे चौगुनी करदी थी। मैंने कहा इतना सूद मैं नहीं दूंगा, पर वह जिद करने लगा, मैंने भी हुज्जत की, अन्तमें यह फैसला हुआ कि अगर मैं उसका कुल कर्ज बेबाक करदूं तो यह पुराने कपड़ोंसे भरा हुआ एक बक्स मेरे हाथ बहुत रियायत करके बेच देगा। उसका सब रुपया और कपड़ोंका दाम देकर मेरे पास बहुत कम रुपये बच गये। रुपये लेकर राग़बने कहा, मेरे डेरे पर चलो तो कपड़ोंका बक्स साथ करदूं। मैं साथ होगया। डेरे पर पहुंचकर कपड़ोंके बक्सको हाथ लगानेके पहले उसने एक दस्ताना पहना फिर एक प्रकारका तेल अपने नथनोंमें लगाया। मैंने इसका कारण पूछा तो

कहा कि कपड़ोंके नीचे कस्तूरीकी डिब्बी है उसकी बू मुझसे बर-दाश्त नहीं होती। सन्दूक खोलकर उसने अनेक प्रकारकी पोशाकें दिखाईं, सब नामको पुरानी थीं। इससे मुझे कुछ आश्चर्य हुआ कि वह दुष्ट यहूदी उन्हें इतने सस्तेदामोंपर मेरे हाथ क्यों बेचताहै, यह बातउससे पूछी तो बोला—भाई मुराद तुमसे मुझे सदासे मुह-ब्बत है इसीलिये खुद घाटा सहकर भी तुम्हारा भला करनाचाहता हूं। खैर यहूदीसे कपड़े लेकर मैं एक घरमें ठहरा और दूसरे दिन उन्हें बाजारमें लेगया। जिसने वह कपड़े देखे पसन्द किये। हाथों हाथ सब बिक गये सिर्फ एक कोट मखमलका मैंने अपने वास्ते रख लिया। अपने भाग्यका यह पलटा देखकर मुझे खुशी हुई और उस पाजी यहूदीको दुआएं देता डेरे पर आया। दूसरे या तीसरे दिन दमिश्कका एक व्यापारी जिसके हाथ मैंने कई पोशाकें बेची थीं मुंह बनाये मेरे पास आया और पूछा कि वह कपड़े तुम कहांसे लाये। मैंने कुल हाल बयान कर दिया। उसने कहा तुम्हारे कपड़े जबसे मेरे गुलामोंने पहने तभीसे बुखारमें तड़प रहे हैं न जाने कपड़ोंमें क्या था। वह तो चला गया पर मुझे बड़ी चिन्ता हुई। बाजार पहुंचा तो वहां भी अनेक लोगोंने यही पूछा कि कपड़े कैसे थे? जिस जिसने पहने सबको बुखारआगया। मैंने सबको यही उत्तर दिया। धीरे धीरे वहां बड़ी भीड़ जमा होगई। चारों ओरसे बुखार बुखारकी पुकार मच गई। लोगोंने कहा कि चलकर वह बक्स दिखा जिसमें कपड़े आये थे। मैं सबको अपने साथ डेरे पर लाया और बक्स दिखाया। सबने उसे ऊपर नीचेसे देखा। एक कोनेमें किसी नगरका नाम मिटा हुआ पाया। खूब ध्यानसे देखा तो "स्मिर्ना" लिखा देखा। स्मिर्ना नगरका नाम सुनते ही सब भयसे चिल्ला उठे क्योंकि वहां उस समय प्लेगका बहुत जोर था. बक्स और कपड़ोंमें भी अवश्य उसकी छूत मौजूद थी। प्लेगके भयसे सब पागल होगये और मुझे मारने दौड़े। मैंने मिन्नत करके कहा कि इस इस तरह दुष्ट यहूदी

ने मुझे धोखा दिया। मुझे स्वयं प्लेगकी कुछ खबर नहीं। क्योंकि मैं भी उसीमेंका कोट पहने हूं। व्यापारियोंने मेरी बात पर विश्वास किया और सब घबराकर काजीके पास दौड़े गये। उनके जातेही मुझे अपनी फिक्र हुई कि कहीं मुझे तो प्लेग की छूत नहीं लग गई। क्या जाने यही बात थी या सिर्फ भयसे उस रात मुझे बड़ा बुखार चढ़ा और उसीमें बेहोश होगया। न जाने कितने दिन बाद जब फिर जरा जरा होश हुआ, देखा कि एक झोपड़ेमें पड़ा हूं एक बुढ़िया पास बैठी कशीदा काढ़ रही है। कुछ समझमें न आया। अन्तमें बुढ़ियासे मालूम हुआ कि मैं अपने डेरे पर कई दिन तक बुखारमें पड़ा रहा, काजीको खबर हुई उसने मुझे उस झोपड़ेमें शहरके बाहर भिजवा दिया और मेरा मकान गिराकर कुल असबाब जला दिया। मेरे कपड़ोंसे नगरमें प्लेग फैल गई सैकड़ों आदमी उसके शिकार बन चुके थे। बुढ़िया से यह सुन मुझे बड़ा दुःख हुआ, मेरे बुरे भाग्यका असर अबतक तो मेरेही ऊपर पड़ता था पर आह! इस मामलेमें तो मैं हत्यारा बन गया सैकड़ोंकी जानें लीं! जितनी गालियां मुझे याद थीं सबसे उस पाजी बेईमान यहूदी राशबको याद किया। नापाक सूअरका बच्चा! मेरा मित्र बनता था! और यह तो देखिये कि इन भयङ्कर प्लेगके कपड़ोंका रियायती दाम लेकर मेरा सिर और मूंड़ा! यों ही बकझक कर बुढ़ियासे कहा कि तू नगरमें फिरकर देख आ कि अब क्या हालत है। उसने लौट कर कहा कि अब प्लेगका उतना जोर नहीं है पर तोभी १०—१२ रोज मरते हैं पांच चार मुर्दे तो मुझेही मिले थे। खैर, कुछ दिनोंके बाद मैं उठ बैठा और धीरे धीरे चङ्गा होगया। एक दिन पोशाक बदलकर मैं नगरमें पहुंचा। मैं नहीं चाहता था कि मुझ अभागेको कोई पहचाने, इस लिये जबतक नगरमें फिरा एकआंख बन्दकिये था जिससे लोग मुझे काना समझकर धोखा खायें। अपना नाम भी बदल दिया क्योंकि मुराद अभागा उस समय वहां शैतानसे ज्यादा भयङ्कर होरहा था।

जहां चार आदमी खड़े हुए वहां मेराही जिक्र करते बुरा भला कहते और गालियां देते। यह देख मैंने निश्चय करलिया कि अब मिसर विशेषकर काहिरामें ठहरना ठीक नहीं। इरादा किया कि देश लौटकर अब कोई छोटा मोटा रोजगार करूंगा और एकान्त में जा बैठूंगा जिससे मेरे दुर्भाग्यसे औरोंको कष्ट न हो। रोजगार का खयाल आतेही मुझे अपने चीनीके बरतनकी याद आई। आपको याद होगा कि मैं कुस्तुन्तुनियासे भागते समय उसे भाई सालहकी दुकानमेंही छोड़ आया था। यह बात मेरे ध्यानमें आई कि जबसे मैं उस बरतनसे अलग हुआ तभीसे घोर विपदोंमें पड़ने लगा। अवश्य यह उसकी मन्नकी कदर न करनेका फल है। इस बातकी मुझे रात दिन चिन्ता रहने लगी। एक रात स्वप्नमें भी देखा कोई कह रहा है कि मुराद जा और अपना बरतन सम्हाल! अब तो मैंने देश लौटनेका पक्का इरादा कर लिया और एक दिन एक व्यापारीके जहाज पर कुस्तुन्तुनिया लौट पड़ा। इस बार जहाज पर मेरी बदौलत कोई विपद न पड़ी, वह कुशल-पूर्वक कुस्तुन्तुनिया पहुंच गया। जहाजसे उतरकर बड़े चावसे मैं अपने घर चला। महल्लेमें पहुंचा, पर अफसोस! जहां अपना घर छोड़ गया था वहां दूसरेका बाग पाया। मेरा भाई अब वहां नहीं रहता था!

पहले तो मुझे डर हुआ कि वह मरगया। इतनेमें बागसे एक आदमी निकला, उससे पूछा तो वह बड़े आश्चर्यसे बोला कि तू सालह भाग्यवानको नहीं जानता! चल, मैं बताऊं। उसने बाजारमें आकर एक ओरका रास्ता बता दिया। मैं पूछता पूछता एक बड़े अमीर महल्लेमें पहुंचा और एक आलीशान मकानके सामने खड़ा हुआ। सालह बहुत अमीर होगया था, इसकी मुझे खुशी हुई। मैंने खबर कराई सालह उसी दम बाहर आया और मुझे देखतेही लिपट गया। घरमें चलनेको कहा तो मैंने कहा, भाई, मेरे दुर्भाग्यने मुझे अभी नहीं छोड़ा, तेरे घरमें प्रवेश करके मैं

कोई विपद नहीं लाना चाहता, मैं सिर्फ अपने बरतनके लिये आया हूं। भाईने कहा बरतन रखा है, तुम अन्दर चलो और भाग्य की कुछ परवा न करो। वह जिद करके मुझे घरमें लेगया और कुछ दिन मैं वहीं रहा। सालहने नगरमें अच्छी इज्जत पैदा की थी, वह नगरके बड़े सौदागरोंमें गिना जाता था और सुलताना भी उसपर बड़ी कृपा रखती थीं। भाईके घर आये आठ दिन नहीं हुए थे कि फिर कमबखतीने मुझे घेरा। हुआ यह कि सुलतानाकी आज्ञासे सालहने बेनीस नगरका एक बहुत सुन्दर और बहुमूल्य सिंगारदान मंगाया था। वह आदमीके कदसे भी ऊंचा था और शीशे और बिल्लोरकी अनेक छोटी छोटी चीजें उसके साथ थीं। जिस दिन वह लाकर घरमें रखागया मेरे भाईने कहा कि रातको उसी बहुत रक्षा करना होगी। नौकरोंको इसकी खूब ताकीद करदी थी। जिस कमरेमें सिंगारदान रखा गया उसीके दरवाजे पर चारपाई बिछा और बगलमें नंगी तलवार रख मैं भी उसकी रक्षाके लिये सोया। मैंने सालहसे कहा था कि जबतक मेरे दममें दम रहेगा सिंगारदानको ठेस न पहुंचने दूंगा। पहरा देते जरा मेरी आंख लग गई, आधी रातके निकट एकाएक किसी भयंकर शब्दसे चौंक पड़ा, ऐसा मालूम हुआ कि सिंगारदान वाले कमरेमें कोई जोरसे कूदा। झट तलवार पकड़कर झपटता हुआ कमरेमें पहुंचा, एक लम्पकी रोशनीमें देखा कि एक मनुष्य नंगी तलवार लिये खड़ा था, मैंने कड़क कर पूछा तू कौन है और यहां क्यों आया! उससे कोई उत्तर न पाकर मैंने फिर वही प्रश्न क्रोधसे किया, फिर भी वह कुछ न बोला तो मैंने उसे मारनेको हाथ उठाया, उसपर वार करनेका मेरा इरादा नहीं था पर साथही उसे भी हाथ उठाते देखकर मैंने बड़े क्रोधसे चिल्लाकर एक वार करही तो दिया। बड़े तड़ाकेका शब्द हुआ और झनाझन शीशेके टुकड़ोंकी मूसल धार वर्षा मुझ पर होगई, साथही कोई काली

बला जोरसे मेरे मुंह पर तमाचासा मारकर लम्पसे टकराई और फिर उड़कर बाहर चली गई। मैं भी तलवार लिये उसके पीछे भागा पर आह! राहमें बहुमूल्य और बड़े सुगंधित तेलोंकी शीशियां रखी थीं, सज्जनो! उनकी पेटियोंसे ठोकर खाकर जो यह अभागा गिरा तो सीढ़ियोंसे नीचे लुढ़क गया! मेरी मृत्यु होजानेमें तब कोई कसर बाकी नहीं थी!

घरके नौकर और मेरा भाई यह गड़बड़ सुनकर आये। वहां शोर मच गया कि "किसीने शाही सिंगारदान तोड़ दिया!" किसीने आवाज दी "अरे! अर्क बेदमुश्ककी बोतलें और इत्रोंके कमूर किसने चूरकर दिये?" मैंने अपने दिलमें कहा कि खैर, इनकी शीशियां तो मुझसे टूटीं, पर हाय! सिंगारदान न बचा! वह दुष्ट चोर उसे तोड़कर आखिर जीता निकल गया! उसी वक्त सालह सीढ़ियों पर आया मुझे नीचे पड़ा देख उठवाया और एक आह भर कर कहा—"भाई तू बेशक अभागा है! आज तू ने गजब किया!" मैंने कहा—सच कहता है, अभागा न होता तो क्यों चोर भागता और क्यों मुझे चोट लगती! भाईने आश्चर्यसे पूछा चोर! कहां था? मैंने उससे कुल घटना कह सुनाई, सुनकर सालह हंसने लगा और लोग भी मुसकुराने लगे। मैं आश्चर्यसे सबका मुंह देखनेलगा, अन्तमें भाईने हंसतेहुए कहा—भाई मैंने जो पहले कहा उसका बुरा न मानना, जो हुआ सो हुआ। असलमें तुम्हें बड़ा धोखा हुआ चोट भी तुम्हें उसीकी बदौलत लगी और सुलतानाका सिंगारदान भी टूटा। मैंने कहा तूने चोरको नंगी तलवार लिये झपटते नहीं देखा। मैंने देखा और पीछा किया, फिर धोखा कैसा? सालहने कहा—तुम समझे नहीं! अच्छा सुनो, सिंगारदान वाले कमरेके दरवाजे पर लम्प था, उसकी रोशनी सिंगारदान पर भी कुछ पड़ती थी। तुम घबराकर उठे तलवार लिये झपटे हुए अन्दर गये, तुम्हें भी कोई झपटता हुआ अपनी ओर आता दिखाई दिया पर वह कौन था?—तुम

थे, शीशेमें अपनी ही परछाईंको तुमने चोर समझा !" सज्जनो ! क्या यह कहनेकी जरूरत है कि भाईसे यह सुनकर मैं शर्मसे पानी पानी होगया ? उसने अपनी बात समाप्त नहीं की थी तभी मैं कुल मामला समझ गया। पर यह बात समझमें न आई कि मुझे तमाचा किसने मारा और लम्प कैसे बुझा। मैंने अपना सन्देह प्रगट किया तो भाईने कहा—वह तुम्हारा काला कबूतर था, जो तुम बच्चोंके वास्ते लाये थे। बच्चोंने उसे कमरेमें उसे रख दिया था। तुम्हारी खड़बड़से वह घबराकर उड़ा इसीसे तुम्हारे मुंह और लम्पसे टकराया। छोटे भतीजेने मुझसे कहा —"हमारा कबूतर उड़ा दिया, हम अब खेलेंगे किससे ? हम नहीं जानते, हमें और ला दो।" बस कुछ न पूछिये, उस समय दिल यही चाहता था कि कबूतरोंकी जाति भरकी गरदन मरोड़ दूं। साथही अपनी भूल पर भी पछताता कि क्यों काले रंगका कबूतर लिया, जिससे घरमें यों अशकुन हुआ और मैं लंगड़ा होनेसे बचा !

भाईने मुझसे छिपानेकी तो बहुत चेष्टा की पर दोचार ही दिनोंमें मुझे साफ मालूम होगया कि सुलतानाका सिंगारदान टूट जानेसे वह बड़ा भयभीत था विशेषकर मुझे अपने घर रखनेसे वह और भी डरता था। ऐसी सूरतमें मैंने वहां रहना उचित न समझा और भाईसे बिदा मांगी। पहले तो उसने न माना पर अन्तमें राजी हुआ। उसने कहा कि एक व्यापारी अपने कारबारसे अलग होना चाहता है, सो तुम उसकी जगह लेलो तुम्हें लाभ होगा। साल्हने उस व्यापारीसे मोल तोल करके उसकी दुकान मुझे दिलादी और जब मैं बिदा होने लगा तो मेरा चीनीका बरतन भी मेरे हवाले कर दिया। मैं दूसरे घरमें उठ गया और अपना कारबार देखने लगा।

कभी कभी सिंगारदानकी बात याद करके भय होता था कि कहीं सुलतानाके हाथसे मेरे भाईको या मुझे कोई हानि न

पहुंचे। एक दिन दुकानमें बैठा था कि भाईका भेजा एक गुलाम उसकी चिट्ठी लेकर आया। उसमें लिखा था—"सुलताना सिंगारदान टूटनेसे बहुत नाराज हुई और बड़ा क्रोध प्रगट किया है। वह केवल इसी शर्त पर मुझे क्षमा करेंगी यदि मुराद अपना चीनीका बरतन उन्हें देदे।" चिट्ठीमें भाईने मुझसे बिनती की थी कि यदि मैं अपना बरतन देदूंगा तो सुलताना खुश होंगी और सालह बरबाद होनेसे बचेगा। सालहसे भाईको विपदमें कौन छोड़ सकता था? मैंने गुलामसे कहला भेजा कि तू कुछ चिन्ता न कर मैं खुद बरतन लेकर तेरे पास आता हूं। गुलाम चला गया और मैं वह बरतन लेने अपने इसी घरमें आया। ताक परसे उतार कर साफ करने लगा क्योंकि उस पर बहुत गर्द जम गई थी। थोड़ा पानी गर्म किया और साबुन और ब्रुशसे उसे साफ करनेको तय्यार होगया। पर बरतनमें ज्योंही गर्म पानी डाला एकाएक कुछ उबलनेकीसी आवाज आई और मेरे देखते देखते सज्जनो! अफसोस, वह अमूल्य बरतन टुकड़े टुकड़े होगया! मैं हाथ मलता रह गया। वही टुकड़े आपके सामने पड़े हैं—अब तो आपको मेरे फूट फूटकर रोने पर आश्चर्य न रहा! क्या मैं अभागा नहीं हूं? अब मेरी कुल उम्मीदों पर पानी फिर गया। अच्छा होता जो मैं पहलेही मर गया होता! जो काम किया कभी सफल न हुआ! मैं सचमुच अभागा मुराद हूं!

[४]

मुराद अपने दुर्भाग्यकी कथा समाप्त करके रोने लगा। नकली व्यापारी उसे तसल्ली देरहे थे कि एकाएक उस कमरेका द्वार खुला और एक जवान बहुमूल्य वस्त्र पहने अन्दर आया यही मुरादका भाई सालह था। अपने गुलामसे यह सुनकर कि मुराद अपना बरतन स्वयं लावेगा वह खुश हुआ और उसका इन्तजार करने लगा। जब वह बहुत देर तक न आया तो घबराकर स्वयं उसकी खबर लेने भाईके घर आया। बरतनको चूर चूर देख उसने एक

प्राप्त की, साथही नकली व्यापारियोंको आश्चर्य्यसे देखने लगा। कुल मामला समझ उसने अपने स्वभावके अनुसार मुरादको तसल्ली दी और बरतनके टुकड़े जमा करके जोड़ने लगा। कुल टुकड़े ठीक बैठाकर उसने कहा—भाई, रंज न करो। तुम्हारा बरतन फिर बन सकता है। मैं इन टुकड़ोंको आपसमें जुड़वाकर इसे ठीक कराऊंगा। मुराद खुश होगया। व्यापारियोंसे कहा—देखा न आपने, सालहको कमरेमें आये पांच मिनट नहीं हुए कि कुल रञ्ज खुशीसे बदल गया। इसीलिये तो वह भाग्यवान कहलाता है। मेरी दुःखमयी कथा सुनकर आप रञ्जीदा होगये थे, अब देखिये आप भी खुश मालूम होते हैं। यह सालहके आनेकाही फल है। मुझे विश्वास है कि यदि आप उसकी भी कथा सुनेंगे तो मेरे अभागा होनेका सबूत मिलेगा और आप खुश होजायंगे। सालहने कहा—मैं अपनी कथा खुशीसे इन सज्जनोंको सुनाऊंगा पर मेरी प्रार्थना है कि पहले आप मेरे घर चलें कुछ भोजन करें फिर बातचीत करेंगे। नकली व्यापारियोंने वही पहला बहाना किया कि हमारे साथी सरायमें इन्तजार करते होंगे इसलिये हम अधिक नहीं ठहर सकते। पर दोनों भाइयोंकी प्रार्थना वह अस्वीकार न कर सके इसलिये सालहके घर गये। भोजन करनेके बाद उसने अपना वृत्तान्त यों सुनाया—

सज्जनो, आप मुरादसे सुन चुके हैं कि पैदा होतेही मेरा नाम भाग्यवान रखा गया। बचपनहीसे मुझे इस बातका बड़ा घमण्ड था, समझता था कि जिस काममें हाथ लगाऊंगा वही सफल होगा। इस खयालसे मैं इतना ढीठ होगया कि एक दिन अपनी जान गंवा बैठा था। उस समय हजरत सुलतानके पास एक विलायती कारीगर आया था, उसने हजरतको खुश करनेके लिये विचित्र कारीगरीकी अनेक चीजें बनाईं और दिखाईं। सुलतान उसे बहुत चाहते थे। एकबार सुलतानकी सालगिरह पर उसने आतशबाजी बनाई वह बिलकुल नये ढङ्गकी थी हमने कभी वैसी

देखी क्या सुनी भी न थी। उस दिन सन्ध्या होतेही सुलतानी महलसराके सामने वाले मैदानमें हजारों नगरनिवासी उसकी बहार देखने जमा हुए। मैं और बालकोंके साथ सबसे आगे खड़ा था। जरा और आगे बढ़ने लगा तो किसीने रोका और कहा कि आगे न बढ़, जल जायगा। मुझे अपने सौभाग्यका घमण्ड था, समझता था कि मुझ पर किसी प्रकारकी विपद नहीं पड़ सकती। उसका कहना न माना और ढिठाईसे आगे बढ़ने लगा। एकाएक कोई आतशबाजी मेरे पास गिरकर फटी, मैं जमीन पर गिर पड़ा और बुरी तरह जल गया।

सज्जनो! इस दुर्घटनाने मेरी आंखें खोल दीं। मैं जान गया कि मेरा सौभाग्य असलमें कुछ नहीं था, केवल उस लौंडीका ख्याल था। पिताने एक बड़े चतुर और बुद्धिमान जर्राहको मेरे जखमों का इलाज करनेके लिये बुलाया था। उसने मेरे जलनेका कारण पूछा तो मैंने अपनी ढिठाईकी कुल बात कह दी। वह सुन कर हंसा और अनेक तरहसे समझाकर उसने मेरा घमण्ड और ढिठाईका ख्याल दूर कर दिया। कहा—ज्योंही तू साधारण बुद्धि और समझकी राहसे अलग हुआ, अपने सौभाग्य के भरोसे ढीठ होकर आतशबाजीका मुकाबिला किया, त्योंही तुझ पर विपद पड़ी। इससे साबित हुआ कि मनुष्यका कोई काम थोड़ी बहुत बुद्धि और समझ खर्च किये बिना नहीं चल सकता। उसने कहा कि इस बातकी बहस नहीं कि भाग्य वास्तवमें क्या है, अनुभवसे यही साबित हुआ कि हम भाग्यके भरोसे बैठे रहकर शकुन अशकुनके फेरमें पड़कर संसारका कोई काम नहीं कर सकते। कर सकते हैं केवल सोच विचारकर चलनेसे, चेष्टा और परिश्रम करनेसे।

सज्जनो! जर्राहसे यह बातें सुनकर भाग्यके बारेमें मेरा खयाल एक दम बदल गया। मुरादसे इसी विषय पर बहुत बहस हुआ करती पर उसकी समझमें यह बात कभी न आई कि मनुष्य कैसे